

महामुनि

श्री आपानंदघनजी

तथा

श्रीचिदानंदजी विरचित

बहोतेरीड

तेमनी सार्थे केटलांएक बीजा आध्या

त्मिक पदो मेलवी प्रथमावृत्तिथी

कचित् वधारो करीने

श्री मोहमयीमध्ये

श्रावक जीमसिंह माणकें

निर्णयसागर प्रेसमां छपावी प्रसिद्ध करी.

संवत् १९४४ वैशाख वदि त्रयोदश

॥ अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका ॥

१ ॥ प्रथम नैरव रागमां गवातां पदो ॥

| पदांक. | पदनां नामो. | कविनाम | पृष्ठांक. |
|--------|------------------------------------|--------|-----------|
| १ | विरथाजनम गमायो ॥ मूरख वि० चि० | | ६५ |
| २ | जग सपनेकी माया रे ॥ नर जग० चि० | | ६५ |
| ३ | लाल ख्याल देख तेरे, अचरि० चि० | | ७८ |
| ४ | जाग रे बटाउ अब, नई ज़ोर० चि० | | ७८ |
| ५ | चालणां जरूर जाकूं, ताकूं कैसा० चि० | | ७९ |
| ६ | जाग अवलोक निज, शुद्धता० चि० | | ७९ |
| ७ | अजित जिनंद देव, शिरचित्त० चि० | | ८१ |

२ ॥ विज्ञास रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|------------------------------------|--|----|
| १ | जूठी जगमाया नर केरी काया० चि० | | ६३ |
| २ | देखो भवि जिनजीके जुग चरन० चि० | | ६४ |

३ ॥ बिलावल रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|-----------------------------------|--|---|
| १ | क्या सोवे उठ जाग बाउरे. आनं० | | १ |
| २ | रे घरियारे बाउरे. आनं० | | १ |
| ३ | जीय जाने मेरी सफल घरी री... आनं० | | २ |

| पदांक. | पदनां नामो. | कविनाम. | पृष्ठांक. |
|---------------------------------|---------------------------------|---------|-----------|
| ४ | सुहागण जागी अनुचव प्रीत. | आनं० | ३ |
| ५ | पियाबिनु सुध बुध नूली हो० | आनं० | ३१ |
| ६ | मुलडो थोडो नाइव्याजडो घणो. | आनं० | ३८ |
| ७ | मान कहा अब मेरा मधुकर० | चि० | ६६ |
| ८ | डुलह नारी तुं बडी बावरी. | आनं० | १० |
| ९ | ताजोगें चित्त ब्याउं रे वाहाला. | आनं० | १९ |
| १० | मंद विषय शशी दीपतो..... | चि० | ६३ |
| ११ | जोग जुगति जाण्याविना..... | चि० | ६३ |
| १२ | आज सखी मेरे वालमा..... | चि० | ६३ |
| १३ | वस्तुगतें वस्तुको लक्षण..... | चि० | ७७ |
| ४ ॥ प्रजाती रागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| १ | ऐसा ज्ञान बिचारो प्रीतम. | चि० | ७९ |
| २ | विषय वासना त्यागो चेतन. | चि० | ८० |
| ५ ॥ आशावरी रागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| १ | अवधू नट नागरकी बाजी. | आनं० | ३ |
| २ | अवधू क्या सोवें तनमठमें. | आनं० | ४ |
| ३ | आज सुहागन नारी अवधू० | आनं० | ११ |
| ४ | अवधू अनुचव कलिका जागी. | आनं० | १३ |
| ५ | अवधू क्या मागुं गुनहीना. | आनं० | १,४ |

| पदांक. | पदनां नामो. | कविनाम. | पृष्ठांक |
|--------|-------------------------------------|---------|----------|
| ६ | अवधू राम राम जग गावे. | आनं० | १४ |
| ७ | आशा औरनकी क्या कीजें. | आनं० | १५ |
| ८ | अवधू नाम हमारा राखे. | आनं० | १५ |
| ९ | साधो जाइ समतारंग रमीजें. | आनं० | १६ |
| १० | अब हम अमर जये न मरेंगे. | आनं० | ११ |
| ११ | देखो एक अपूर्व खेला. | आनं० | १९ |
| १२ | साधु जाइ अपना रूप जब देखा. | आनं० | २५ |
| १३ | राम कहो रहेमान कहो कोउ० | आनं० | २५ |
| १४ | साधुसंगति बिनुं कैसें पड़्यें. | आनं० | २६ |
| १५ | अवधू सो जोगी गुरु मेरा. | आनं० | ५१ |
| १६ | अवधू ऐसो ज्ञानबिचारी. | आनं० | ५२ |
| १७ | बेहेर बेहेर नहिं आवे औसर० | आनं० | ५२ |
| १८ | मनुप्यारा मनुप्यारा रिखज० | आनं० | ५३ |
| १९ | हठीली आंख्यां टेक न मेटे. | आनं० | ५४ |
| २० | अवधू निरपहू विरला कोइ..... | चि० | ७१ |
| २१ | ज्ञान कला घट नासी जाकूं०.... | चि० | ७३ |
| २२ | अनुजव आनंद प्यारो अब मो० | चि० | ७४ |
| २३ | उं घट विणसत वार न लागे..... | चि० | ७४ |
| २४ | अवधू पीयो अनुजव रस प्याला. | चि० | ७५ |

पदांक. पदनां नामो. कविनाम. पृष्ठांक.

| | | | |
|----|---------------------------------|-----|----|
| ३५ | मारग साचा कोउ न बतावे..... | चि० | ७५ |
| ३६ | अवधू खोलि नयन अब जोवो..... | चि० | ७६ |
| ३७ | अवधू वैराग बेटा जाया. | आ० | ५५ |
| ३८ | मिठडो लागेकंतडोनेखाटोलागेलोक.आ० | | २१ |

६ ॥ रामग्री रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|---------------------------------------|------|----|
| १ | महारो बालुडो संन्यासी. | आनं० | ३ |
| २ | खेले चतुर्गति चौपर, प्रानी मेरो. आनं० | | ७ |
| ३ | मुने महारो कब मलरो मन मेलु. आनं० | | १३ |
| ४ | क्यारेंमुने मलरो महारो संत सनेही. आ० | | १३ |
| ५ | जगत गुरु मेरा में जगतका चेरा. आ० | | ४१ |
| ६ | हमारी लयलागी प्रभुनाम० | आनं० | ४० |

७ ॥ सामेरी रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|--------------------------------------|--|----|
| १ | नितुर जये क्युं ऐसैं, पिया तुम० आनं० | | १७ |
|---|--------------------------------------|--|----|

८ ॥ धन्याश्री रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|-----------------------------------|------|----|
| १ | अनुभव प्रीतम कैसें मनासी..... | आनं० | २६ |
| २ | चेतन अप्पा कैसें लहो री. | आनं० | २८ |
| ३ | बालुडी अबला जोर किश्युं करे. आनं० | | २८ |
| ४ | चेतन सकल वियापक होइ. | आनं० | ४६ |
| ५ | अरि मेरो नाहेरी अतिवारो. | आनं० | ५० |

| पदांक. | पदनां नामो. | कविनाम. | पृष्ठांक. |
|----------------------------------|--------------------------------------|---------|-----------|
| ६ | नूत्यो जमत कहा बे अजान. | चि० | ६७ |
| ७ | संतो अचरिज रूप तमासा. | चि० | ६७ |
| ८ | कर ले गुरुगम ज्ञान विचारा.. | चि० | ६८ |
| ९ | अब हम ऐसी मनमें जाणी. | चि० | ६८ |
| ९ ॥ टोडी रागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| १ | परम नरम मति और न आवे..... | आ० | ६ |
| २ | आंतम अनुभव रीति वरी री..... | आनं० | ६ |
| ३ | मेरी तुं मेरी तुं कांही मरे री. | आनं० | २३ |
| ४ | तेरी हूं तेरी हूं एती कहुं री. | आनं० | २३ |
| ५ | उगोरी जगोरी लगोरी जगोरी..... | आनं० | २३ |
| ६ | चेतन चतुर चोगान लरी री..... | आनं० | २४ |
| ७ | पिय बिन निशदिन फूहं खरी री. | आनं० | २४ |
| ८ | प्रभु तो सम अवर न कोइ खलकृमें. | आ० | ४३ |
| ९ | सोहं सोहं सोहं सोहं. | चि० | ६९ |
| १० | अब लागी अब लागी अब लागी० | चि० | ६९ |
| ११ | प्रीतम प्रीतम प्रीतम प्रीतम. | चि० | ७० |
| १२ | कथणी कथे सहु कोइ..... | चि० | ७२ |
| १० ॥ मालसिरि रागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| ३ | वारे नाह संग मेरो युंही जोवन० | आनं० | १९ |

पदांक. . पदानां नामो. कविनाम. पृष्ठांक.

॥ ११ सारंग रागमां गवातां पदो ॥

| | |
|--------------------------------------|-----|
| १ अनुजव नाथकुं क्युं न जगावे. आनं० | ५ |
| २ नाथ निहारो आप मतासी. आनं० | ५ |
| ३ अनुजव हम तो रावरी दासी.....आनं० | ७ |
| ४ अनुजव तुं है हेतु हमारो. आनं० | ८ |
| ५ मेरे घट ग्यान जानु जयो जोर. आनं० | ८ |
| ६ अब मेरे पति गति देव निरंजन. आ० | ३१ |
| ७ चेतन शुद्धातमकूं ध्यावो. आनं० | ४२ |
| ८ चेतन ऐसा ज्ञान विचारो. आनं० | ४२. |

१२ ॥ गोडी रागमां गवातां पदो ॥

| | |
|-------------------------------------|----|
| १ रीसानी आप मनावो रे. आनं० | १० |
| २ निशानी कहा बतावुं रे. आनं० | ११ |
| ३ विचारी कहा विचारे रे. आनं० | १२ |
| ४ मिलापी आन मिलावो रे. आनं० | १८ |
| ५ देखो आली नटनागरको सांग. आनं० | १८ |
| ६ पिया बिन कौन मिटावे रे. आनं० | ३४ |

१३ ॥ कल्याण रागमां गवातां पदो ॥

| | |
|-------------------------------------|----|
| १ मोकूं कोउ केसी हूंतको. आनं० | ३० |
| २ या पुजलका क्या विसवासा. आनं० | ५० |

| पदांक. | पदनां नामो. | कविनाम्. | पृष्ठांक. |
|--------|-----------------------------------|----------|-----------|
| ॥ १४ | अलश्या वेलावल रागमां गवातां पदो ॥ | | |
| १ | प्रितकी रीत नहिं हो प्रीतम..... | आनं० | ३६ |
| २ | ऐसे जिनचरने चित्त ल्याउं रे मना. | आनं० | ४ए |
| १५ | ॥ इमन रागमां गवातां पदो ॥ | | |
| १ | लागी लगन हमारी. | आनं० | ४४ |
| १६ | ॥ केदारा रागमां गवातां पदो ॥ | | |
| १ | मेरे माजी मजीठी सुण एक वात. | आनं० | ३८ |
| २ | चोले लोगा हूं रडुं तुम जला हासा. | आनं० | ३ए |
| १७ | ॥ कान्हारा रागमां गवातां पदो ॥ | | |
| १ | करे जारे जारे जारे जा. | आनं० | १ए |
| २ | दरिसन प्रानजीवन मोहे दीजें. | आनं० | ४८ |
| १८ | ॥ बिहाग रागमां गवातां पदो ॥ | | |
| १ | लघुता मेरे मन मानी, लइ गुरु० | चि० | ७१ |
| २ | पिया पिया पिया बोल मत० | चि० | ए१ |
| १९ | ॥ मारु रागमां गवातां पदो ॥ | | |
| १ | निश दिन जोवं तारी वाटडी० | आनं० | ए |
| २ | मनसा नट नागरशुं जोरी हो..... | आनं० | २० |
| ३ | पिया बिनु सुध बुद्ध चूली हो. | आनं० | २१ |
| ४ | मायडी मुने निरपखकिणही न०. | आनं० | २५ |

पदांक. पदनां नामो. कविनाम. पृष्ठांक.

| | | | |
|----|-----------------------------------|------|----|
| ५ | पिया बिन सुध बुद्ध मूंदी हो. | आनं० | ३१ |
| ६ | ब्रजनाथसें सुनाथ विण. | आनं० | ३२ |
| ७ | अनंत अरूपी अविगत सासतोहो. आ० | | ३७ |
| ८ | निःस्पृह देश सोहामणो. | आनं० | ४३ |
| ९ | वारो रे कोइ परघर रमवानो ढाल. आ० | | ४७ |
| १० | पिया पर घर मत जावो रे. | चि० | ५६ |
| ११ | पिया निज महेल पधारो रे. | चि० | ५७ |
| १२ | सुअप्पा आप विचारो रे. | चि० | ५७ |
| १३ | बंध निज आप उदीरत रे. | चि० | ५८ |

१० ॥ श्रीरागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|--------------------------------|------|----|
| १ | कितजान म तें हो प्रान नाथ..... | आनं० | १७ |
|---|--------------------------------|------|----|

११ ॥ जंगला काफी रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|---------------------------|-----|----|
| १ | जगमें नहिं तेरा कोइ. | चि० | ८५ |
| २ | जूठी जगतकी माया..... | चि० | ८५ |

१२ ॥ जयजयवंती रागमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|---------------------------------|------|----|
| १ | तरसकी जई दइ कौ दइ की० | आनं० | २१ |
| २ | मेरे प्रान आनंद घन०.... | आनं० | २७ |
| ३ | मेरीसुं तुमतें जुं कहा दूरी के० | आनं० | ३१ |
| ४ | अैसी कैसी घर वसी. | आनं० | ४१ |

(ए)

पदांक. पदनां नामो. कविनाम. पृष्ठांक.

३३ ॥ मालकोश रागमां गवातां पदो ॥

१ पूरव पुण्य उदय करी चेतन, नीका० चि० ए७

३४ ॥ काफी रागमां गवातां पदो ॥

१ वारी हुं बोलडे मीठडे. आनं० ४४

२ अकल कला जगजीवन तेरी. चि० ५ए

३ जौंलो तत्व न सूज पडे रे. चि० ६०

४ आतम परमातम पद पावे. चि० ६०

५ अरज एक गवडीचा स्वामी. चि० ६१

६ ए जिनजिके पायलागरे, तुने क० आ० ५३

७ जौंलो अनुभव ज्ञानरे, घटमें० चि० ७२

८ अकथकथा कुणजाणे हो, तेरी० चि० ७३

९ अलख लख्या किम जावे हो. चि० ७३

३५ ॥ नट रागमां गवातां पदो ॥

१ सारा दिल लागा हे बंसीवारेसूं. आनं० ३७

२ किनगुन जयो रे उदासी. आनं० १००

३६ ॥ काफीहोरीमां गवातां पदो ॥

१ मतिमत एम विचारो रे... चि० ५ए

२ अनुभव मित्त मिलाय दे मोकुं. चि० ७४

३ एरि मुखहोरी गावो री. चि० ७४

पदांक. पदनां नामो, कविनाम. पृष्ठांक.

३७ ॥ मलार रागमां गवातां पदो ॥

१ ध्यानघटा घन ठाए सुदैखो० चि० ६०

२ मत जावोरे जोर बिठोर. चि० ६०

३८ ॥ सोरठ रागमां गवातां पदो ॥

१ ठोराने क्युं मारे ठे रे. आनं० ६

२ कंचनवरणो नाह रे मुने कोइ० आनं० ३६

३ महोटी वहूयें मन गमतुं कीधुं. आनं० ४७

४ मुने माहारा नाहलीयाने मलवानो० आ० ४८

५ निराधार केम सूकी भुने श्याम० आनं० ४९

६ आतमध्यान समान जगतमें० चि० ८६

७ प्रचु मेरो मनडो हटक्यो न माने. चि० ८६

८ तारोजी राज तारोजी राज. चि० ८७

९ आवोजी राज आवोजीराज. चि० ८७

१० गढगिरनार रूडो लागे ठेजी० चि० ८८

११ क्या तेरा क्या मेरा. चि० ९९

३९ ॥ वसंत रागमां गवातां पदो ॥

१ प्यारे आप मिलो कहा एते जात. आ० ३०

२ अब जागो परम गुरु० आनं० ३३

३ ठबीले लालन नरम कहे. ... आनं० ३७

| पदांक. | पदनां नामो. | कविनाम. | पृष्ठांक. |
|--------------------------------|---|---------|-----------|
| ४ | या कुबुद्धि कुमरी कौन जात | आनं० | ३९ |
| ५ | लालन बिन मेरो कुन हवाल. | आनं० | ४० |
| ६ | प्यारे प्रानजीवन ए साच जान. | आनं० | ४० |
| ७ | तुम ज्ञान विज्ञो फूली बसंत | आनं० | १०० |
| ३० ॥ धमालरागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| १ | जाडुकी रात काती सी वहे. | आनं० | ३६ |
| २ | सलूणे साहेब आवेंगे मेरे आली री. | आनं० | ४५ |
| ३ | विवेकी वीरा सह्यो न परे. | आनं० | ४५ |
| ४ | पूढीयें आली खबर नहीं आये. | आनं० | ४६ |
| ३१ ॥ सोयणी रागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| १ | सरण तिंहारे गही ठे. | चि० | ८९ |
| २ | अनुजव ज्योति जगी ठे. | चि० | ८९ |
| ३२ ॥ कैरबा रागमां गवातां पदो ॥ | | | |
| १ | प्रभु नज छे मेरा दिल राजी. | आ० | ५४ |
| २ | अखियां सफल नइ अलि निरखत. | चि० | ६४ |
| ३ | समज परी मोहे समज परी, जग | चि० | ८९ |
| ४ | हारे चित्तमें धरो प्यारे चित्तमें धरो.... | चि० | ९० |
| ३३ ॥ साखीमां बोलाता दोहा ॥ | | | |
| १ | आतम अनुजव रसिकको. | आनं० | ३ |

पदांक. पदनां नामो. कविनाम. पृष्ठांक.

| | | | |
|---|------------------------------|-----------|----|
| १ | जगन्नाशा जंजीरकी. | आनं० | ४ |
| २ | आतम अनुभव फूलकी..... | आनं० | ५ |
| ४ | कुबुधि कुबजा कुटिलगति. | आनं० | ६ |
| ५ | रास ससितारा कला, वली० | आनं० | ३४ |
| ६ | आतम अनुभव रस कथा. | आनं० | ३७ |
| ७ | अण जोवतां लाख, जोवे तो० | आनं० | ४७ |

३४ ॥ देशीयोमां गवातां पदो ॥

| | | | |
|---|--------------------------------|----------|----|
| १ | परमातम पूरणकला. | चि० | ए१ |
| २ | श्रीशंखेश्वर पास जिनंदके. | चि० | ए३ |
| ३ | अजित अजित जिन ध्याइयें. | चि० | ए३ |
| ४ | लग्या नेह जिनचरण हमारा..... | चि० | ए४ |
| ५ | हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत० | चि० | ए५ |
| ६ | चंडवदनी मृगलोयणी ॥ गहूंजी..... | चि० | ए६ |
| ७ | अनुभव अमृत वाणी हो पासजिन.चि० | चि० | ए७ |
| ८ | मणिरचित सिंहासन, स्तुति. | चि० | ए८ |

॥ श्री आनंदघनाय नमः ॥
॥ अथ श्री आनंदघनजी माहाराजकृत
बहुतेरी आदिकनां पद प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ क्या सोवे उठ जाग बाउरे ॥ क्या० ॥ ए आं
कणी ॥ अंजलि जल ज्युं आयु घटत हे, देत पहोरीयां
घरिय घाउ रे ॥ क्या० ॥ १ ॥ इंड चंड नागिंड मुनिंड
चले, कोण राजा पति साह राउ रे ॥ नमत नमत
नवजलधि पायकें, नगवंत नजनविन नाऊ नाउ
रे ॥ क्या० ॥ २ ॥ कहा विलंब करे अब बाउरे, तरी
नवजलनिधि पार पाउ रे ॥ आनंदघन चेतनमयमूर
ति, शुद्ध निरंजन देव ध्याउ रे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बीजुं ॥ राग वेलावल ॥ एकताली ॥

॥ रे घरिया रे बाउरे, मत घरीय बजावे ॥ नर सिर
बांधत पाघरी, तुं क्या घरीय बजावे ॥ रे० ॥ १ ॥
केवल काल कला कले, पै तुं अकल न पावे ॥ अकल
कला घटमें घरी, मुज सो घरी जावे ॥ रे० ॥ २ ॥
आतम अनुभव रस नरी, यामें और न मावे ॥ आ
नंदघन अविचल कला, बिरला कोइ पावे ॥ रे० ॥ ३ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ जीय जाने मेरी सफल घरी री ॥ जीय० ॥ ए आं
कणी ॥ सुत वनिता धन यौवन मातो, गर्जतणी वेद
न विसरी री ॥ जीय० ॥ १ ॥ सुपनको राज साच करी
माचत, राचत ठांह गगन बदरी री ॥ आइ अचानक
काल तोपची, गहेगो जुं नाहर बकरी री ॥ जी० ॥
॥ २ ॥ अतिही अचेत कबु चेतत नांहि, पकरी टेक
हारिल लकरी री ॥ आनंदधन हीरो जन ठांमी, नर
मोह्यो माया ककरी री ॥ जीय० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

पद चोथुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ सुहागण जागी अनुभव प्रीत ॥ सुहा० ॥ ए आं
कणी ॥ निंद अज्ञान अनादिकी, मिट गई निजरीत ॥ सु०
॥ १ ॥ घट मंदिर दीपक कियो, सहज सुज्योति सरूप ॥
आष पराइ आपही, ठानत वस्तु अनूप ॥ सु० ॥ २ ॥
कहा दिखावुं औरकूं, कहा समजावुं जोर ॥ तीर अ
चूक है प्रेमका, लागे सो रहे गोर ॥ सु० ॥ ३ ॥ नादवि
लुद्धो प्राणकूं, गिने न तृण मृगजोय ॥ आनंदधन
प्रभु प्रेमकी, अकथ कहानी कोय ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू नट नागरकी बाजी, जाणे न बांजण का

जी ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ धिरता एक समचमें ठाने,
 उपजे विणसे तबही ॥ उलट पलट ध्रुवसत्ता राखे, या
 हम सुनी न कबही ॥ अ० ॥ १ ॥ एक अनेक अनेक
 एक फुनी, कुंमल कनक सुजावे ॥ जलतरंग घटमाटी
 रविकर, अगनित ताहि समावे ॥ अ० ॥ २ ॥ है नांही
 है वचन अगोचर, नय प्रमाण सत्तजंगी ॥ निरपख
 होय लखे कोइ विरजा, क्या देखे मत जंगी ॥ अ०
 ॥ ३ ॥ सर्वमयी सरवंगी माने, न्यारी सत्ता जावे ॥
 आनंदघन प्रभु वचनसुधारस, परमारथ सो पावे ॥ अ०

॥ पद ठहुं ॥

॥ साखी ॥ आतम अनुजव रसिकको, अजब सुन्यो
 विरतंत ॥ निर्वेदी वेदन करे, वेदन करे अनंत ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥ माहारो बालुडो संन्यासी, देह देवल मठवासी
 ॥ मा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इना पिंगला मारग त
 जयोगी, सुखमना घर वासी ॥ ब्रह्मरंध्र मधि आस
 न पूरी बाबु, अनहद तान बजासी ॥ मा० ॥ २ ॥
 यम नियम आसन जयकारी, प्राणायाम अन्यासी ॥
 प्रत्याहार धारणाधारी, ध्यान समाधि समासी ॥ मा
 हा० ॥ ३ ॥ मूलउत्तरगुण मुझाधारी, धर्मकासन वासी ॥

रेचक पूरक कुंजक सारी, मन इंडिय जयकासी ॥ मा०
 ॥ ४ ॥ धिरता जोग युगति अनुकारी, आपो आप वि
 मासी ॥ आतम परमातम अनुसारी, सीजे काज स
 मासी ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ साखी ॥ जग आशा जंजीरकी, गति उलटी कुल मोर ॥
 ऊकखो धावत जगतमें, रहे बूटो इक ठोर ॥ १ ॥

॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू क्या सोवे तन मठमें, जाग विलोक न
 घटमें ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ तन मठकी परतीत
 न कीजें, ढहि परे एक पलमें ॥ हल चल मेट खबर
 ले घटकी, चिन्हे रमता जलमें ॥ अवधू० ॥ १ ॥
 मठमें पंचनूतका वासा, सासाधूत खवीसा ॥ ढिन
 ढिन तोही बलनकूं चाहे, समजे न बौरा सीसा ॥ अ
 वधू० ॥ २ ॥ शिरपर पंच वसे परमेसर, घटमें सूठम
 बारी ॥ आप अन्यास लखे कोइ विरला, निरखे धूकी
 तारी ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ आशा मारी आसन घर घटमें,
 अजपा जाप जपावे ॥ आनंदघन चेतनमयमूरति,
 नाथ निरंजन पावे ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥साखी॥ आतम अनुभव फूलकी, नवली कोऊ रीत ॥
नाक न पकरे वासना, कान ग्रहे न प्रतीत ॥ १ ॥

॥ राग धन्याश्री अथवा सारंग ॥

॥ अनुभव नाथकूं क्युं न जगावे ॥ ममता संग
सो पाय अजागल, थनतें दूध डुहावे ॥ अ० ॥ १ ॥ मैरे
कहेतें खीज न कीजें, तुंही ऐसी सीखावे ॥ बहोत
कहेतें लागत ऐसी, अंगुली सरप दिखावे ॥ अ०
॥ २ ॥ औरनके संग राते चेतन, चेतन आप ब
तावे ॥ आनंदधनकी सुमति-आनंदा, सिद्ध सरूप
कहावे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ नाथ निहारो आपमतासी, वंचक शठ संचक
शी रीतें, खोटो खातो खतासी ॥ नाथ० ॥ १ ॥ आप
विगूचण जगकी हांसी, सियानप कौन बतासी ॥ नि
जजन सुरिजन मेला ऐसा, जैसा दूधपतासी ॥ ना
थ० ॥ २ ॥ ममता दासी अहित करि हर विधि, वि
विध जांति संतासी ॥ आनंदधन प्रभु विनति मानो,
और नहिं तूं समतासी ॥ नाथ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद दशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ परम नरममति और न आवे ॥प०॥ मोहन गुन रोहन गति सोहन, मेरी वैरन ऐसैं नितुर लिखावे ॥ परम० ॥ १ ॥ चेतन गात मनातन एतैं, मूल वसात जगात बढावे ॥ कोउ न दूती दलाल विसीठी, पा रखी प्रेम खरीद बनावे ॥ परम० ॥ २ ॥ जांघ उधारी अघनी कहा एते, विरहजार निस मोही संतावे ॥ एती सुनी आनंदधन नावत, और कहा कोऊ झूंम बजावे ॥ परम० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

पद अगीआरमुं ॥ राग मालकोश वेलावल, टोडी ॥

॥ आतम अनुभव रीति वरी री ॥ आ० ॥ ए आं कणी ॥ मोर बनाए निजरूप निरूपम, विह्वन रुचिकर तेग धरी री ॥ आतम० ॥ १ ॥ टोप सन्नाह शूरको बानो, एकतारी चोरी पहिरी री ॥ सत्ता थलमें मोह विदारत, ऐ ऐ सुरिजन मुह निसरी री ॥ आतम० ॥ २ ॥ केवल कमला अपह्वर सुंदर, गान करे रस रंग नरी री ॥ जीत निशान बजाइ विराजे, आनंदधन सर्वग धरी री ॥ आतम० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥साखी॥कुबुधि कुबजा कुटिल गति, सुबुधि राधिका

नारी ॥ चोपर खेले राधिका, जीते कुबजा हारी ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥ खेले चतुर्गति चौपर ॥ प्रानी मेरो खेण ॥ ए
 आंकणी ॥ नरद गंजीफा कौन गिनत है, माने न
 लेखे बुद्धिवर ॥ प्रा० ॥ १ ॥ राग दोष मोहके पासे,
 आप बनाए हितकर ॥ जैसा दाव परे पासेका, सारी
 चलावे खिलकर ॥ प्रा० ॥ २ ॥ पांच तल्ले है दूआ
 नाइ, ठका तले है एका ॥ सब मिल होत बराबर
 लेखा, यह विवेक गिनवेका ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चउरा
 सीमाचे फिरे नीली, स्याह न तोरी जोरी ॥ लाल
 जरद फिर आवे घरमें, कबहुंक जोरी विठोरी ॥ प्रा० ॥
 ॥ ४ ॥ जाव विवेकके पाउ न आवत, तब लग
 काची बाजी ॥ आनंदघन प्रभु पाउ देखावत, तो
 जीते जीय गाजी ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद तेरमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ अनुभव हम तो रावरी दासी ॥ अ० ॥ आइ कहां
 तें माया ममता, जानुं न कहांकी वासी ॥ अनु० ॥ १ ॥
 रीज परें वाके संग चेतन, तुम क्युं रहत उदासी ॥ व
 रज्यो न जाय एकांत कंतकों, लोकमें होवत हांसी ॥
 अनु० ॥ २ ॥ समजत नांही नितुर पति एती, पल

एक जात्र ठमासी ॥ आनंदधन प्रभु घरकी समता,
अटकली और लबासी ॥ अनु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चौदसुं ॥ राग सारंग ॥

॥ अनुभव तूं है हेतु हमारो ॥ अनु० ॥ ए आं
कणी ॥ आय उपाय करो चतुराइ, औरको संघ नि
वारो ॥ अ० ॥ १ ॥ तृष्णा राम जांमकी जाइ, कहा
घर करे सवारो ॥ शठ ठग कपट कुंटुंबही पोखे, म
नमें क्युं न विचारो ॥ पाठांतर ॥ उनकी संगति वा
रो ॥ अ० ॥ २ ॥ कुलटा कुटिल कुबुद्धि संग खेलकें,
अपनी पत क्युं हारो ॥ आनंदधन समता घर आवे,
वाजे जीत नंगारो ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पंदरसुं ॥ राग सारंग ॥

॥ मेरे घट ग्यान जानु जयो जोर ॥ मेरे० ॥ चेतन
चकवा चेतन चकवी, जागो विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥
फैली चिहुंदिस चतुरा जाव रुचि, मिथ्यो जरम तम
जोर ॥ आपकी चोरी आपही जानत, औरे कहत
न चोर ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अमल कमल विकच जये
नूतल, मंदविषय शशिकोर ॥ आनंदधन एक वद्वज
लागत, और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद शोलमुं ॥ राग मारु ॥

॥ निशदिन जोउं तारी वाटडी, घरे आवो.रे ढो
ला ॥ निश० ॥ मुज सरिखा तुज लाख है, मैरे तूही
ममोला ॥ निश० ॥ १ ॥ जवहरी मोल करे लालका,
मेरा लाल अमोला ॥ ज्याके पटंतर को नही, उसका
क्या मोला ॥ निश० ॥ २ ॥ पंथ निहारत लोयणें,
इग लागी अमोला ॥ जोगी सुरत समाधिमें, मुनि
ध्यान जकोला ॥ निश० ॥ ३ ॥ कौन सुनै किनकूं
कहूं, किम माहूं मैं खोला ॥ तेरे मुख दीठे टले, मेरे
मनका चोला ॥ निश० ॥ ४ ॥ मित्त विवेक वातें कहै,
सुमता सुनि बोला ॥ आनंदधन प्रचु आवशे, सेजडी
रंग रोला ॥ निश० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ ठोराने क्युं मारे ठे रे, जाये काख्या मेण ॥ ठोरो
ठे महारो बालो जोलो, बोले ठे अमृत वयण ॥ ठो
रा० ॥ १ ॥ लेय लकुटियां चालण लागो, अब कांइ
फूटा ठे नेण ॥ तूंतो मरण सिराणें सूतो, रोटी देजे
कोण ॥ ठोरा० ॥ २ ॥ पांच पचीश पचासां ऊपर,
बोले ठे सूधा वेण ॥ आनंदधन प्रचु दास तिहारो,
जनुम जनमके सेण ॥ ठोरा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अठारमुं ॥ राग मालकोश, रागणी गोडी ॥

॥ रीसाना आप मनावो रे, विच्च वसीठ न फेर ॥
 री० ॥ सौदा अगम है प्रेमका रे, परख न बूजे कोय ॥
 ले देवाही गम पडे प्यारे, और दलाल न होय ॥
 रीसा० ॥ १ ॥ दो बातां जीयकी करो रे, मेटो मनकी
 आंठ ॥ तनकी तपत बूजाइयें प्यारे, बचन सुधारस
 ढांट ॥ रीसा० ॥ २ ॥ नेक नजर निहारीयें रे, उजर
 न कीजें नाथ ॥ तनक नजर मुजरे मले प्यारे, अ
 जर अमर सुख साथ ॥ रीसा० ॥ ३ ॥ निसि अं
 धियारी घनघटा रे, फाउं न वाटके फंद ॥ करुणा
 करो तो वहुं प्यारे, देखुं तुम मुख चंद ॥ रीसा० ॥
 ॥ ४ ॥ प्रेम जहां डुविधा नही रे, मेट कुराहित
 राज ॥ आनंदघन प्रभु आय बिराजे, आपही सम
 ता सेज ॥ रीसा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ डुलह नारी तूं बडी बावरी, पिया जागे तूं सो
 वे ॥ पिया चतुर हम निपट अयानी, न जानुं क्या
 होवे ॥ डुल० ॥ १ ॥ आनंदघन पिया दरस पियासें,
 खोल घूँघट मुख जोवे ॥ डुल० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद वीशमुं ॥ राग गोडी, आशावरी ॥

॥ आज सुहागन नारी, अवधू आज ॥ ए आंकणी ॥
मेरे नाथ आप सुध लीनी, कीनी निज अंगचारी ॥
॥ अवधू ॥ १ ॥ प्रेम प्रतीत राग रुचि रंगत, पहिरे
जीनी सारी ॥ महिंदी नक्ति रंगकी राची, नाव अंज
न सुखकारी ॥ अवधू ॥ २ ॥ सहिज सुजाव चूरी
में पेनी, थिरता कंकन नारी ॥ ध्यान उरवसी उरमें
राखी, पिय गुनमाल आधारी ॥ अवधू ॥ ३ ॥
सुरत सिंदूर मांग रंग राती, निरते वेनी समारी ॥ उ
पजी ज्योत उद्योत घट त्रिभुवन, आरसी केवल का
री ॥ अवधू ॥ ४ ॥ उपजी धुनि अजपाकी अनह
द, जीत नगारे वारी ॥ ऊडी सदा आनंदधन बरखत,
बिन मोर एकन तारी ॥ अवधू ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥ राग गोडी ॥

॥ निसानी कहा बतावुं रे, तेरो अंगम अगोचर
रूप ॥ ए आंकणी ॥ रूपी कहुं तो कहु नही रे, बंधे कैसे
अरूप ॥ रूपारूपी जो कहुं प्यारे, ऐसे न सिद्ध अनूप
॥ निसा ॥ १ ॥ शुद्ध सनातन जो कहुं रे, बंधन मो
ह विचार ॥ न घटे संसारी दिसा प्यारे, पुण्य पाप
अदतार ॥ निसा ॥ २ ॥ सिद्ध सनातन जो कहुं रे,

उपजे धिनसे कौन ॥ उपजे विनसे जो कहुं प्यारे,
 नित्य अबाधित गौन ॥ निसा० ॥ ३ ॥ सर्वांगी सब
 नयधनी रे, माने सब परमान ॥ नयवादी पल्लो ग्रही
 प्यारे, करे लराइ ठान ॥ निसा० ॥ ४ ॥ अनुभव अ
 गोचर वस्तु हे रे, जांनबो एही रे लाज ॥ कहन सुननको
 कहु नही प्यारे, आनंदधन महाराज ॥ निसा० ॥ ५ ॥

॥ पद बावीशमुं ॥ राग गोडी ॥

॥ विचारी कहा विचारे रे, तेरो आगम अगम अ
 याह ॥ वि० ॥ ए आंकणी ॥ बिनु आधे आधा नही रे,
 विन आधेय आधार ॥ मुरगी विन इमा नहीं प्यारे, य
 विन मुरगकी नार ॥ वि० ॥ १ ॥ चुरटा बीज विना
 नही रे, बीज न चुरटा टार ॥ निसि विन दिवस घटे
 नही प्यारे, दिन विन निसि निरधार ॥ वि० ॥ २ ॥
 सिद्ध संसारी विन नहि रे, सिद्ध बिना संसार ॥ कर
 तां विन करनी नहि प्यारे, विन करनी करतार ॥
 ॥ वि० ॥ ३ ॥ जामन मरण बिना नही रे, मरण न
 जनम विनाश ॥ दीपक विन परकाशता प्यारे, विन
 दीपक परकाश ॥ वि० ॥ ४ ॥ आनंदधन प्रभु वचन
 की रे, परिणति धरो रुचिवंत ॥ शाश्वत जाव विचारके
 प्यारे, खेलो अनादि अनंत ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू अनुभव कलिका जागी ॥ मति मेरी आ
तम समरन लागी ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ जाये न क
हुं उरठिग नेरी, तेरी विनता वेरी ॥ मायाचेरी
कुंटुंब करी हाथे, एक मेढ दिन घेरी ॥ अ० ॥ १ ॥
जरा जनम मरन वस सारी, असरन डुनियां जेती ॥
देढव कांश्न बागमें मीयां, किसपर ममता एती ॥
॥ अ० ॥ २ ॥ अनुभव रसमें रोग न सोगा, लोक
वाद सबं मेटा ॥ केवल अचल अनादि अबाधित, शिव
शंकरका जेटा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वर्षा बुंद समुद् समा
नी, खबर न पावे कोई ॥ आनंदधन व्हे ज्योति स
मावे, अलख कहावे सोई ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥ राग रामग्री ॥

॥ मुने महारो कब मिलसे मनमेलू ॥ मु० ॥ मनमे
लुविण केलि न कलियें, वाले कवल कोइ वेलू ॥ मु० १ ॥
आप मिव्याथी अंतर राखे, सुमनुष्य नही ते लेलू ॥
आनंदधन प्रभु मन मलियाविण, कोनवि विलगे चेलू ॥

॥ पदपञ्चीशमुं ॥ राग रामग्री ॥

॥ क्यारें मुने मिलसे माहारो संत सनेही ॥ क्यारे ० ॥
॥ ठेक ॥ संत सनेही सूरिजन पाखे, राखे न धीरज दे

ही ॥ क्यारे ० ॥ १ ॥ जन जन आगल अंतरगतनी,
वातडली कहुं केही ॥ आनंदधन प्रचु वैद्य वियोगें,
किम जीवे मधुमेही ॥ क्या ० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद षष्ठीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू क्या मागुं गुनहीना, वे गुन गनि न प्रवी
ना ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ गाय न जानुं बजाय न जानुं,
न जानुं सुर जेवा ॥ रीज न जानुं रीजाय न जानुं, न जा
नुं पदसेवा ॥ अ० ॥ १ ॥ वेद न जानुं किताब न जानुं,
जानुं न लहून ठंदा ॥ तरकवादविवाद न जानुं, न
जानुं कवि फंदा ॥ अ० ॥ २ ॥ जाप न जानुं जुवाब न
जानुं, न जानुं कविवाता ॥ जाव न जानुं जगति न
जानुं, जानुं न सीरा ताता ॥ अ० ॥ ३ ॥ ग्यान न
जानुं विग्यान न जानुं, न जानुं जजनामां ॥ पाठांतर ॥
न जानुं पदनामा ॥ आनंदधन प्रचुके घरद्वारे, रटन
करुं गुणधामा ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू राम राम जग गावे, विरक्षा अलख लखावे
॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ मतवाला तो मतमें माता, मत
वाला मठराता ॥ जटा जटाधर पटा पटाधर, ठता
ठता धर ताता ॥ अ० ॥ १ ॥ आगम पढि आगमधर

थाके, माया धारी ठाके ॥ डुनियांदार डुनीसैं लागे,
दासा सब आशाके ॥ अ० ॥ १ ॥ बहिरातम मूढा
जगजेता, मायाके फंद रहेता ॥ घट अंतर परमातम
नावे, डुर्जन प्राणी तेता ॥ अ० ॥ २ ॥ खगपद ग
गन मीनपद जलमें, जो खोजे सो बौरा ॥ चित पं
कज खोजे सो चिन्हे, रमता आनंद जौरा ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ पद अष्टावीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ आशा औरनकी क्या कीजें, ग्यान सुधारस पी
जें ॥ आशा० ॥ ए आंकणी ॥ नटके द्वारद्वार लोकनके,
कूकर आशाधारी ॥ आतम अनुभव रसके रसीया,
उतरे न कबहुं खुमारी ॥ आशा० ॥ १ ॥ आशा दा
सीके जे जाये, ते जन जगके दासा ॥ आशा दासी
करे जे नायक, लायक अनुभव प्यासा ॥ आशा० ॥
॥ २ ॥ मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्नि पर
जाली ॥ तन जाठी अंबटाइ पिये कस, जागे अनुभव
लाली ॥ आशा० ॥ ३ ॥ अगम पीयाला पीयो मत
वाला, चिन्ही अथ्यातम वासा ॥ आनंदघन चेतन
वहै खेले, देखे लोक तमासा ॥ आशा० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद उगणत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू नाम हमारा राखे, सो परम महारस चा

खे ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ नही हम पुरुषा नहि हम
 नारी, वरन न जात हमारी ॥ जाति न पांति न सा
 धन साधक, नही हम लघु नही जारी ॥ अ० ॥ १ ॥
 नही हम ताते नही हम सीरे, नही दीर्घ नही भोटा ॥
 नही हम जाइ नही हम जगिनी, नही हम बाप न
 बेटा ॥ अ० ॥ २ ॥ नही हम मनसा नही हम शब्दा,
 नही हम तरणकी धरणी ॥ नही हम जेख जेख धर
 नांही, नही हम करता करणी ॥ अ० ॥ ३ ॥ नही हम
 दरसन नही हम परसन, रस न गंध कबु नांही ॥ आनं
 दधन चेतनमय मूरति, सेवकजन बलि जाहीं ॥ ४ ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ साथो जाइ समता रंग रमीजें, अवधू ममता संग
 न कीजें ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ संपति नांहिं नांहिं
 ममता में, ममतामां मिस मेटे ॥ खाट पाट तजी लाख
 खटाउ, अंत खाखमें लेटे ॥ सा० ॥ १ ॥ धन धर
 तीमें गाडे बौरे, धूर आप मुख ल्यावे ॥ मुखक साप
 होवेगो आखर, तातें अलब्धि कहावे ॥ सा० ॥ २ ॥
 समता रतनागस्की जाइ, अनुभव चंद सुजाइ ॥ का
 लकूट तजी जावमैं श्रेणी, आप अमृत ले आइ ॥ सा०
 ॥ ३ ॥ लोचन चरन सहस चतुरानत, इनतें बहुत

मराइ ॥ आनंदधन पुरुषोत्तम नायक, हित करी कंठ
लगाइ ॥ सा० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥ श्रीराग ॥

॥ कित जानमतें हो प्राननाथ, इत आय नि
हारो घरको साथ ॥ कि० ॥ १ ॥ उत माया काया
कब न जात, यहु जड तुम चेतन जग विख्यात ॥
कि० ॥ उत करम नरम विष वेलि संग, इत परम
नरम मति मेलि रंग ॥ कि० ॥ २ ॥ उत काम कपट
मद मोह मान, इत केवल अनुभव अमृत पान ॥
अलि कहे समता उत दुःख अनंत, इत खेले
आनंदधन वसंत ॥ कि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥ राग सामेरी ॥

॥ नितुर नये क्युं ऐसैं, पीया तुम ॥ नितुर० ॥ ए
आंकणी ॥ मेंतो मन वच क्रम करी राउंरी, राउरी रीत
अनेसैं ॥ नि० ॥ १ ॥ फूल फूल नमर कैसी जांउरी नरत
हुं, निवहे प्रीत क्युं ऐसैं ॥ मेंतो पीयुतें ऐसी मलि
आली, कुसुम वास संग जैसैं ॥ नि० ॥ २ ॥ ऐंठी
जान कहा परे एती, नीर निवहियें जैसैं ॥ गुन अव
गुन न विचारो आनंदधन, कीजियें तुमहो तैसैं ॥३॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥ राग गोडी ॥

॥ मिलापी आन मिलावो रे, मेरे अनुभव मीठडे
 मित्त ॥ मि० ॥ चातक पीउ पीउ रटे रे, पीउ मिलाव
 न आन ॥ जीव पीवन पीउ पीउ करे प्यारे, जीउ
 नीउ आन ए आंन ॥ मि० ॥ १ ॥ डुखीयारी निस
 दिन रहुं रे, फिरुं सब सुध बुद्ध खोय ॥ तन मनकी
 कबहुं लहुं प्यारे, किसें दिखाउं रोय ॥ मि० ॥ २ ॥
 निसि अंधारी मुहि हसे रे, तारे दांत दिखाय ॥ जादो
 कादो में कीयो प्यारे, असुअन धार वहाय ॥ मि
 ला० ॥ ३ ॥ चित्त चातक पीउ पीउ करे रे, प्रणमे दो
 कर पीस ॥ अबलाछुं जोरावरी प्यारे, एती न कीजें
 रीस ॥ मिला० ॥ ४ ॥ आतुर चातुरता नही रे, सुनि
 समता टुक बात ॥ आनंदघन प्रभु आय मिले प्यारे,
 आज घरे हर ज्ञांत ॥ मिला० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥ राग गोडी ॥

॥ देखो आली नट नागरको सांग ॥ दे० ॥ और
 ही और रंग खेलति तातें, फीका लागत अंग ॥ दे०
 ॥ १ ॥ औरह तो कहा दीजें बहुत कर, जीवित है
 इह ढंग ॥ मैरो और विच अंतर एतो, जैतो रूपें
 रंग ॥ दे० ॥ २ ॥ तनु सुध खोय घूमत मन ऐसैं,

मानुं कबुइक खाई जंग ॥ एते पर आनंदधन नावत,
और कहा कोउ दीजें संग ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥ राग दीपक अथवा कान्हरो ॥
॥ करे जारे जारे जारे जा ॥ करे० ॥ सजि सणगार
बनाये नूखन, गइ तब सूनी सेजा ॥ करे० ॥ १ ॥
विरहव्यथा कबु ऐसी व्यापति, मानुं कोइ मारति
बेजा ॥ अंतक अंत कहांलूं लेगो प्यारे, चाहे जीव
तूं लेजा ॥ करे० ॥ २ ॥ कोकिल काम चंइ चूता
दिक, चेतन मत है जेजा ॥ नवल नागर आनंदधन
प्यारे, आइ अमित सुख देजा ॥ करे० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद ठत्रीशमुं ॥ रागं मालसिरि ॥

॥ वारे नाह संग मेरो, यूंही जोवन जाय ॥ ए
दिन हसन खेलनके सजनी, रोते रेन विहाय ॥ वा
रे० ॥ १ ॥ नग नूषणसें जरी जातरी, मोतन कबु
न सुहाय ॥ इक बुइ जीयमें ऐसी आवत है, लीजें
री विष खाय ॥ वारे० ॥ २ ॥ नां सोवत है छेत उ
सास न, मनहीमें पिठताय ॥ योगिनी दुयकें निकसूं
घरतैं, आनंदधन समजाय ॥ वारे० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद साडत्रीशमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ ता जोगें चित्त व्याउं रे वाहाला ॥ ता० ॥ समकित

दोरी शील लंगोटी, घुल घुल गांव घुलाउं ॥ तत्त्व गु
 फामें दीपक जोउं, चेतन रतन जगाउं रे वहाला ॥ ता०
 ॥ १ ॥ अष्ट करम कंमैकी धूनी, ध्याना अगन जला
 उं ॥ उपशम ठनने जसम ठणाउं, मली मली अंग
 लगाउं रे वहाला ॥ ता० ॥ २ ॥ आदि गुरुका चेला
 हो कर, मोहके कान फराउं ॥ धरम शुक्ल दोड
 मुझ सोहै, करुणा नाद बजाउं रे वहाला ॥ ता०
 ॥ ३ ॥ इह विध योग सिंहासन बैठा, मुगति पुरीकूं
 ध्याउं ॥ आनंदधन देवेंडसैं जोगी, बहुर न कलिमें
 आउं रे वहाला ॥ ता० ॥ ४ ॥

॥ पद आडत्रीशमुं ॥ राग मारु ॥

॥ मनसा नटनागरसूं जोरी हो ॥ म० ॥ नटनागरसूं
 जोरी सखी हम, और सबनसों तोरी हो ॥ म० ॥ १ ॥ लो
 क लाजसूं नाहीं न काज, कुल मरयादा ठोरी हो ॥
 लोक बटाउ हसो बिरानो, अपनो कहत न कोरी हो ॥
 म० ॥ २ ॥ मात तात अरु सङ्गन जाति, वात क
 रत है जोरी हो ॥ चाखे रसकी क्युं करि बूटे, सुरिजन
 सुरिजन टोरी हो ॥ ३ ॥ औरहनो कहा कहावत
 औरपें, नांहि न कीनी चोरी हो ॥ काठ कढ्यो सो ना
 चत निवहे, और चाचर चर फोरी हो ॥ म० ॥ ४ ॥

ग्यानसिंधुं मथित पाइ, प्रेम पीयूष कटोरी हो ॥ मोदत
आनंदघन प्रभु शशिधर, देखत दृष्टि चकोरी हो ॥ ५ ॥

॥ पद उगणचालीशमुं ॥ राग जयजयवंती ॥

॥ तरसकी जइ दइकौ दइकी सवारी री, तीरुण क
टाकू ठटा लागत कटारीरी ॥ तर० ॥ १ ॥ सायक लाय
क नायक प्रानकोपहारी री, काजर काज न लाज बाज
न कहुं वारीरी ॥ तर० ॥ २ ॥ मोहनी मोहन ठग्यो जगत
ठगारी री, दीजीयें आनंदघन दाह हमारी री ॥ तर० ॥ ३ ॥

॥ पद चालीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ मीठडो लागे कंतडो ने, खाटो लागे लोक ॥ कं
तविहूणी गोठडी, ते रण मांहे पोक ॥ मी० ॥ १ ॥
कंतडामें कामण, लोकडामें शोक ॥ एकठामें केम र
हे, दूध कांजी थोक ॥ मी० ॥ २ ॥ कंतविण चउ
गति, आणुं मानुं फोक ॥ उघराणी सिरड फिर
ड, नाणुं तेजें रोक ॥ मी० ॥ ३ ॥ कंत विना मति
मारी, अहवाडानी बोक ॥ धोक दुं आनंदघन,
अवरने ठोक ॥ मी० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥ वेलावल अथवा मारु ॥

॥ पीया विनु सुख बुख जूजी हो, आंख लगा
इ दुःख महेलके, जरूखे जूजी हो ॥ पीया० ॥ १ ॥

हसती तबहुं बिरानीया, देखी तन मन ठीज्यो हो ॥
 समजी तब एती कही, कोइ नेह न कीज्यो हो ॥
 ॥ पीया० ॥ १ ॥ प्रीतम प्राणपति विना, प्रिया कैसें
 जीवे हो ॥ प्रान पवन विरहा दसा, जुयंगम पीवे हो
 ॥ पिया० ॥ २ ॥ शीतल पंखा कुम कुमा, चंदन कहा
 लावे हो ॥ अनल न विरहानल ये है, तन ताप ब
 ढावे हो ॥ पीया० ॥ ४ ॥ फागुन चाचर इक निसा,
 होरी सिरगानी हो ॥ मैरे मन सब दिन जरे, तन
 खाख उडानी हो ॥ पीया० ॥ ५ ॥ समता महेल
 बिराज है, वाणी रस रेजा हो ॥ बलि जावं आनंद
 घन प्रभु, ऐसें नितुर न व्हेजा हो ॥ पीया० ॥ ६ ॥
 ॥ पद बेतालीशमुं ॥ राग सारंग अथवा आशावरी ॥
 ॥ अब हम अमर जये न मरेंगे ॥ अ० ॥ या का
 रन मिथ्यात दीयो तज, क्युं कर देह धरेंगे ॥ अ०
 ॥ १ ॥ राग दोसं जग बंध करत है, इनको नास
 करेंगे ॥ मखो अनंत कालतें प्राणी, सो हम का
 ल हरेंगे ॥ अ० ॥ २ ॥ देह विनासी हूं अविनासी,
 अपनी गति पकरेंगे ॥ नासी जासी हम थिर
 वासी, चोखे व्हे निखरेंगे ॥ अ० ॥ ३ ॥ मखो अ
 नंत वार बिन समज्यो, अब सुख दुःख विसरेंगे ॥

आनंदधन निपट निकट अक्षर दो, नहीं समरे सो
मरेंगे ॥ आ० ॥

॥ पद त्रैतालीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ मेरी तुं मेरी तुं कांहीं मरे री ॥ मेरी० ॥ कहे चेतन
समता सुनि आखर, और मैढदिन जूठ लरे री ॥ मेरी० ॥
॥ १ ॥ एतीतो हुं जानुं निहचें, रीरी पर न जराउ जरे री ॥
जब अपनौ पद आप संजारत, तब तेरे परसंग परे री ॥
मेरी० ॥ औसर पाइ अथातम सैली, परमातम निज
योग धरे री ॥ सक्ति जगावे निरुपम रूपकी, आनंदधन
मिलि केलि करे री ॥ मेरी० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चुम्मालीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ तेरी हुं तेरी हुं एती कहूं री, इन बातमें दगो
तुं जाने, तो करवत कासी जाय गहूं री ॥ तेरी० ॥ १ ॥
वेद पुराण कितेब कुरानमें, आगम निगम कबु न
लहूं री ॥ वाचा फोर सिखाइ सेवनकी, में तेरे रस
रंग रहूं री ॥ तेरी० ॥ २ ॥ मैरे तो तुं राजी चहियें, औ
रके बोल में लाख सहूं री ॥ आनंदधन पिया वेग मि
लो प्यारे, नहीं तो गंग तरंग बहूं री ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

॥ पद पीस्तालीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ उगो री जगो री जगो री जगो री, ए आंकणी ॥ ममता

माया आतम लेमति, अनुभव मेरी और दगोरी ॥ ठगो०
 ॥१॥ चात न तात न मात न जात न, गात न वात न
 लागत गोरी ॥ मैरें सबदिन दरसन परसन, तान सुधा
 रस पान पगो री ॥ ठगो० ॥२॥ प्रान नाथ विबरेकी
 वेदन, पार न पावुं अथग थगो री ॥ आनंदघन प्रभु द
 र्शन औघट, घाट उतार न नाव मगो री ॥ ठगो० ॥३॥

॥ पद ठेंतालीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ चेतन चतुर चोगान लरी री ॥ चे० ॥ जीत लै
 मोहरायको लसकर, मिसकर ठांम अनाद धरी री ॥
 ॥ चे० ॥१॥ नांगी काढ ले ताड ले डुसमन, लागे का
 ची दोय धरी री ॥ अचल अबाधित केवल मनसुफ,
 पावे शिव दरगाह जरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ और लराई
 लरे सो बावरा, सूर पठाडे नांउं अरी री ॥ धरम मरम
 कहा बूजे न औरें, रहे आनंदघन पद पकरीरी ॥ आ० ३

॥ पद सुडतालीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ पिय बिन निस दिन जूरुं खरी री ॥ पिय० ॥ ए
 आंकणी ॥ लहुडी वडीकी कहानी मिटाइ ॥ द्वारतें
 आंखे कवन टरी री ॥ पिय० ॥१॥ पट नूखन तन नौक
 न उंढे, जावे न चोंकी जराउं जरी री ॥ शिवकमला आ
 ली सुख नउ पावत, कौन गिनत नारी अमरी री ॥ पिय०

॥ ३ ॥ सास विसास उसास न राखे, निणद निगोरी
जोर लरी री ॥ और तबीब न तपत बुजावत, आनंद
घन पीयूषजरी री ॥ पिया० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥ राग मारु, जंगलो ॥

॥ मायडी मुने निरपख किणही न मूकी ॥ निर
पख० ॥ माय० ॥ निरपख रहेवा घणुंही जूरी, धीमे
निजमति फूकी ॥ माय० ॥ १ ॥ योगीयें मलीने योगण
कीनी, यतियें कीनी यतणी ॥ जगतें पकडी जगताणी
कीनी, मतवाले कीनी मतणी ॥ माय० ॥ २ ॥ केणे मूकी
केणे लुंची, केणे कैसें लपेटी ॥ एकपखो में कोइ न
देख्यो, वेदना किणही न मेटी ॥ माय० ॥ ३ ॥ राम ज
णी रहीमान जणाई, अरिहंत पाठ पढाई ॥ घरघरने
हुं धंधे वलगी, अलगी जीव सगाई ॥ माय० ॥ ४ ॥
केणे ते थापी केणे उथापी, केणे चलावी किण रा
खी ॥ केणे जगाडी केणे सूआडी, कोईनुं कोई नथी
साखा ॥ माय० ॥ ५ ॥ धांग डुर्बलने तेजीजें, ठींगे
ठींगो वाजे ॥ अबला ते केम बोली शकियें, वड योधाने
राजे ॥ माय० ॥ ६ ॥ जे जे कीधुं जे जे कराव्युं, तेह
कहेती हूं लाजुं ॥ थोडे कहे घणुं प्रीठी लेजो, घरशुं
तीरुथ नहीं बीजुं ॥ माय० ॥ ७ ॥ आप वीती कहेतां

रीसावे, तेथी जोर न चाले॥आनंदधन वाहालो बांढ
डी जाले,तो बीजुं सघलुं पाले ॥ माय० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ पद उंगणपच्चाशमुं ॥ राग सोरठ ॥

॥ कंचन वरणो नाह रे, मुने कोय मिलावो ॥कं०॥
अंजन रेख न आंख न जावे, मंजन शिर पडो दाह
रे ॥ मुने कोय० ॥ १ ॥ कौन सेन जाने पर मनकी,
वेदन विरह अथाह ॥ थरथर धूजे देहडी मारी, जिम
वानर जरमाह रे ॥ मुने० ॥ २ ॥ देह न गेह न नेह
न रेह न, जावे न दूहा गाहा ॥ आनंदधन वालो बां
हडी जाले, निशदिन धरुं उमाहा रे ॥ मुने० ॥ ३ ॥

॥ पद पच्चाशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ अनुभव प्रीतम कैसे मनासी ॥ अ० ॥ षिन नि
र्धन सधन षिन निर्मल, समल रूप बतासी ॥ अनु०
॥ १ ॥ षिनमें शक्र तक्र फुनि षिनमें, देखुं कहत
अनासी ॥ विरज न विच्च आपा हितकारी, निर्धन
फूठ खतासी ॥ अनु० ॥ २ ॥ तोहि तूं मैरो मैहि
तुं तेरी, अंतर काहें जनासी ॥ आनंदधन प्रचु आन
मिलावो, नहितर करो धनासी ॥ अनु० ॥ ३ ॥

॥ पद एकावनमुं ॥ राग धमाल ॥

॥ जाडुंकी राति कातीसी वहे, षातीय षिन षिन

ढीना ॥ जाडुं० ॥ १ ॥ प्रीतम सब ठबी निरखके हो, पीउ
 पीउ पीउ कीना ॥ वाहीबिच चातक करे हो, प्रान हरे
 परवीना ॥ जा० ॥ १ ॥ एक निसि प्रीतम नांउंकी हो, वि
 सर गई सुध नाउ ॥ चातक चतुरविना रही हो, पीउ
 पीउ पीउ पीउ पाउ ॥ जाडुं० ॥ ३ ॥ एक समे आलापके
 हो, कीने अडाने गान ॥ सुधर बपीहा सुर धरे हो,
 देत है पीउ पीउ तान ॥ जाडुं० ॥ ४ ॥ रात विजाव
 विलात है हो, उदित सुजाव सुजान ॥ सुमता साच
 मते मिले हो, आए आनंदधन मान ॥ जाडुं० ॥ ५ ॥

॥ पद बावनमुं ॥ राग जयजयवंती ॥

॥ मेरे प्रान आनंदधन तान आनंदधन ॥ ए आं
 कणी ॥ मात आनंदधन तात आनंदधन, गात आनं
 दधन जात आनंदधन ॥ मे० ॥ १ ॥ राज आनंदधन
 काज आनंदधन, साज आनंदधन लाज आनंदधन
 ॥ मे० ॥ २ ॥ आज आनंदधन गाज आनंदधन, नाज
 आनंदधन लाज आनंदधन ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥ राग सोरठ मुजतानी ॥

॥ नटरागिणी ॥ सहेली ॥

॥ सास दिल लगा है, बंसीवारेसूं ॥ बंसीवारेसूं
 प्रान् प्यारेसूं ॥ सा० ॥ मोर मुकुट मकराकृतकुंमल,

पीतांबर पटवारेसूं ॥ सा० ॥ १ ॥ चंद्र चकोर जये प्राण
पपर्श्या, नागरनंद दूजारेसूं ॥ इन सखीके गुन गंडप
गावे, आनंदघन उजीयारेसूं ॥ सा० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥ राग प्रजाती आशावरी ॥ रातडी
रमीने किहांथी आविया ॥ ए देशी ॥

॥ मूलडो थोडो जाई व्याजडो घणो रे, केम करी
दीधो रे जाय ॥ तलपद पूंजी में आपी सघली रे, तोहे
व्याज पूरुं नवि थाय ॥ मू० ॥ १ ॥ व्यापार जागो जलव
ट थल वटें रे, धीरे नहीं नीसानी माय ॥ व्याज ठो
डावी कोइ खंधा परठवे रे, तो मूल आपुं सम खाय
॥ मू० ॥ २ ॥ हाटडुं मांहुं रूडा माणक चोकमां रे, सा
जनीयांनुं मनडुं मनाय ॥ आनंदघन प्रभु शेठ शिरो
मणि रे, बांहडी जालजो रे आय ॥ मू० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ चेतन आपा कैसें लहोइ ॥ चे० ॥ सत्ता एक अ
खंम अबाधित, इह सिद्धांत पख जोइ ॥ चे० ॥ १ ॥ अ
न्वय अरु व्यतिरेक हेउको, समज रूप त्रम खोइ ॥ आ
रोपित सब धर्म और है, आनंदघन तत सोइ ॥ चे० ॥ २ ॥

॥ पद ठप्पनमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ बालुडी अबला जोर किश्युं करे, पीउडो पर

घर जाय ॥ पूरवदिसि पङ्क्तिमदिसि रातडो, रवि अ
 स्तंगत थाय ॥ बा० ॥ १ ॥ पूनम ससी सम चेतन
 जाणीयें, चंडातप सम जाण ॥ वादल जर जिम दल
 श्रिति आणीयें, प्रकृति अनावृत जाण ॥ बा० ॥ २ ॥
 परघर नमतां स्वाद किशो लहे, तन धन यौवन हा
 ण ॥ दिन दिन दीसे अपयश वाधतो, निज जन न
 माने कांण ॥ बा० ॥ ३ ॥ कुलवट ठांमी अवट ऊवट
 पडे, मन मेहूवाने घाट ॥ आंधो आंधे मिले बे जण,
 कोण देखाडे वाट ॥ बा० ॥ ४ ॥ बंधु विवेकें पीउडो
 बूजव्यो, वाख्यो परघर संग ॥ आनंदधन समताघर
 आणे, वाधे नव नव रंग ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ देखो एक अपूरव खेला, आपही बाजी आप
 ही बाजीगर, आप गुरु आप चेला ॥ देखो ० ॥ १ ॥
 लोक अलोक बिच आप बिराजित, ग्यान प्रकाश
 अकेला ॥ बाजी ठांम तहां चढ बैठे, जिहां सिंधुका
 मेला ॥ देखो ० ॥ २ ॥ वागूवाद खटनाद सहुमें, किसके
 किसकें बोला ॥ पाहाणको नार कांही उठावत, एक तारें
 का चोला ॥ देखो ० ॥ ३ ॥ षटपद पदके जोगसिखिस,

क्योंकर गजपद तोला ॥ आनंदघन प्रचु आय मिलो
तुम, मिट जाय मनका जोला ॥ देखो ॥ ४ ॥

॥ पद अछावनमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ प्यारे आय मिलो कहायेंतें जात, मेरो विरह
व्यथा अकुलात घात ॥ प्यारे ॥ १ ॥ एक पेसान
र न जावे नाज, न नूषण नही पट समाज ॥ प्यारे ॥
॥ २ ॥ मोहन रास न दूसत तेरी आसी, मदनो
जय है घरकी दासी ॥ प्यारे ॥ ३ ॥ अनुभव जाहके
करो विचार, कद देखे द्वै वाकी तनमें सार ॥ प्यारे ॥
॥ ४ ॥ जाय अनुभव जइ समजाये कंत, घर आयें
आनंदघन जये वसंत ॥ प्यारे ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद उगणशाठमुं ॥ राग कव्याण ॥

॥ मोकूं कोऊ कैसी दूंतको, मेरे काम एक प्रान
जीवनसूं, और जावे सो बको ॥ मो ॥ १ ॥ में
आयो प्रचु सरन तुमारी, लागत नाही. धको ॥ चु
ज न उठाय कहुं औरनसूं, करहुं जकरहीसको ॥ मो ॥
॥ २ ॥ अपराधि चित्त ठान जगत जन, कोरिक जां
त चको ॥ आनंदघन प्रचु निहचे मानो, इह जन
रावरो थको ॥ मो ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद शाठमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ अब मेरे पति गति देवनिरंजन ॥ अ० ॥ नट
कूं कहा कहा सिर पटकूं, कहा करूं जन रंजन ॥
॥ अ० ॥ १ ॥ खंजन दृगन दृगन लगावुं, चाहुं
न चितवन अंजन ॥ संजन घट अंतर परमात्म,
सकल डुरित नय चंजन ॥ अ० ॥ २ ॥ एह काम
गवि एह काम घट, एही सुधारस मंजन ॥ आनंद
घन प्रभु घटवनके हरि, काम मतंग गज गंजन ॥
अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकशठमुं ॥ राग जयजयवंती ॥

॥ मेरी सुं तुमतें जुं कहा, दूरीके होनै सबैरी री ॥
॥ मे० ॥ १ ॥ रूतेसैं देख मेरी, मनसा दुःख घेरी री ॥
जाके संग खेलो सोतो, जगतकी चेरी री ॥ मे० ॥ २ ॥
शिरहेदी आगें धरे, और नहीं तेरी री ॥ आनंदघन
कीसो, जो कहुं हुं अनेरी री ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बाशठमुं ॥ राग मारु ॥

॥ पीयाबिन सुधबुद्ध मूंदी हो, विरह चुयंग नि
सा समे, मेरी सेजडी खूंदी हो ॥ पी० ॥ १ ॥ जो
यण पान कथा मिटी, किसकुं कहुं सूधी हो ॥ आ
ज काल घर आनकी, जीव आस विलुद्धी हो ॥

॥ पी० ॥ १ ॥ वेदन विरह अथाह है, पाणी नव
 नेजा हो ॥ कौन हबीब तबीब है, टारे कर करेजा
 हो ॥ पी० ॥ ३ ॥ गाल हथेली लगायकें, सुरसिंधु
 समेली हो ॥ असुअन नीर वहायकें, सींचूं कर वे
 ली हो ॥ पी० ॥ ४ ॥ श्रावण जाड़ घनघटा, बिच
 बीज ऊबूका हो ॥ सरिता सरवर सब नरे, मेरा घ
 टसर सब सूका हो ॥ पी० ॥ ५ ॥ अनुभव बात
 बनायकें, कहे जैसी जावे हो ॥ समता टुक धीरज
 धरे, आनंदधन आवे हो ॥ पी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रेश्छुं ॥ राग मारु ॥

॥ ब्रजनाथसें सुनाथ विण, हाथो हाथ विकायो ॥
 बिचकों कोउ जनरूपाल, सरन नजर नायो ॥ ब्र० ॥
 ॥ १ ॥ जननी कहुं जनक कहुं, सुत सुता कहायो ॥
 जाइ कहुं जगिनी कहुं, मित्र शत्रु जायो ॥ ब्र० ॥ २ ॥
 रमणी कहुं रमण कहुं, राउ रज उतायो ॥ सेवकप
 ति इंद चंद, कीट जूंग गायो ॥ ब्र० ॥ ३ ॥ कामी
 कहुं नामी कहुं, रोग जोग मायो ॥ निशपतिधर देह
 गेह, धरि विविध विध धरायो ॥ ब्र० ॥ ४ ॥ विधिनि
 पेध नाटक धरी, नेख आठ ठायो ॥ जाषा षट् वेद
 चार, सांग शुद्ध पढायो ॥ ब्र० ॥ ५ ॥ तुमसें गजरा

ज पाय, गर्दन चढी धायो ॥ पायस सुग्रहको विसा
री, जीख नाज खायो ॥ ब्र० ॥ ६ ॥ लीलाचुंह टुक
न चाय, कहोजुं दास आयो ॥ रोमरोम पुलकित हूं,
परम लाज पायो ॥ ब्र० ॥ ७ ॥ एरि पतितके उधारन
तुम, कहिसो पीवत मामी ॥ मोसुं तुम कब उधा
रो, क्रूर कुटिल कामी ॥ ब्र० ॥ ८ ॥ और पतित के
इ उधारे, करणी बिनुं करता ॥ एक काही नाउं ले
उं, जूठे बिरुद धरता ॥ ब्र० ॥ ९ ॥ करनी करी पा
र नए, बहोत निगम साखी ॥ शोजा दइ तुमकूं ना
अ, अपनी पत राखी ॥ ब्र० ॥ १० ॥ निपट अज्ञानी
पापकारी, दास है अपराधी ॥ जानु जो सुधार हो, अ
ब नाथ लाज साथी ॥ ब्र० ॥ ११ ॥ औरको उपासक
हूं, कैसें कोइ उधारुं ॥ इविधा यह राखो मत, या वरी
विचारुं ॥ ब्र० ॥ १२ ॥ गईसो तो गइ नाथ, फेर नहिं
कीजें ॥ द्वारे रह्यो ढीग दास, अपनो करी लीजें ॥
॥ ब्र० ॥ १३ ॥ दासकों सुधारी लेहु, बहुत कहा कहियें ॥
आनंदधन परम रीत, नाउंकी निवहियें ॥ ब्र० ॥ १४ ॥

॥ पद चोशठमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ अब जागो परमगुरु परमदेव प्यारे, मेटहु हम
तुम बिच नेद ॥ अ० ॥ १ ॥ आली लाज निगोरी

गमारी जात, मुहि आन मनावत विविध जात ॥
 अ० ॥ १ ॥ अलि पर निर्मूली कुलटी कान, मुहि
 तुहि मिलन बिच देत हान ॥ अ० ॥ ३ ॥ पति म
 तवारे और रंग, रमे ममता गणिकाके प्रसंग ॥ अ०
 ॥ ४ ॥ जब जड तो जड वास अंत, चित्त फूले आ
 नंदघन जय वसंत ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांशवमुं ॥

॥ साखी ॥ रास ससी तारा कला, जोसी जोझे
 जोस ॥ रमता सुमता कब मिले ॥ (पाठांतर ॥ आतम
 मित्ता किम मिले) चांगे विरहा सोस ॥ १ ॥

॥ गोडी रागमां ॥

॥ पीया बिन कौन मिटावे रे, विरहव्यथा असरा
 ल ॥ पी० ॥ १ ॥ निंद नीमाणी आंख तेरे, नाठी
 मुज दुःख देख ॥ दीपक शिर मोले खरो प्यारे, तन
 थिर धरे न निमेष ॥ पी० ॥ २ ॥ ससि सरिण तारा
 जगी रे, विनगी दामिनी तेग ॥ रयणी दयण मते दगो
 प्यारे, मयण सयण विनु वेग ॥ पी० ॥ ३ ॥ तनपिंज
 र फूरे पखो रे, ऊडी न सके जीउ हंस ॥ विरहानल
 जाला जली प्यारे, पंख मूल निरवंस ॥ पी० ॥ ४ ॥
 ऊसासासें वढाऊको रे, वाद वदे निशि रांम ॥ नभने

ऊसासा मनी प्यारे, हटकै न रयणी मांम ॥ पी० ॥ ५ ॥
 इह विधि ठे जे घरधणी रे, उससुं रहे उदास ॥ हरविध
 आइ पूरी करे प्यारे, आनंदघन प्रभु आस ॥ पी० ॥ ६ ॥

॥ पद ढाशठमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ साधु जाइ अपना रूप जब देखा ॥ साधु० ॥
 करता कौन कौन फुनी करनी, कौन मागेगो लेखा ॥
 ॥ साधु० ॥ १ ॥ साधुसंगति अरु गुरुकी कृपातैं,
 मिट गइ कुलकी रेखा ॥ आनंदघन प्रभु परचो पायो,
 ऊतर गयो दिल जेखा ॥ साधु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सडशठमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ राम कहो रहेमान कहो कोउ, कान कहो महादेव
 री ॥ पारसनाथ कहो कोउ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेव
 री ॥ राम० ॥ १ ॥ जाजन जेद कहावत नाना, एक मृत्ति
 का रूप री ॥ तैसें खंम कल्पना रोपित, आप अखंम स
 रूप री ॥ राम० ॥ २ ॥ निजपद रमे राम सो कहियें, र
 हिम करे रहेमान री ॥ करज्ञे करम कान सो कहियें, म
 हादेव निर्वाण री ॥ राम० ॥ ३ ॥ परसे रूप पारस सो
 कहियें, ब्रह्म चिन्हे सो ब्रह्म री ॥ इह विध साधो आप
 आनंदघन, चेतनमय निःकर्म री ॥ राम० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अडशतमुं ॥ राग अशावरी ॥

॥ साधुसंगति बिनु कैसें पैयें, परम महारस धाम
री ॥ ए आंकणी ॥ कोटि उपाय करे जो बीरो,
अनुजव कथा विशराम री ॥ साधु० ॥ १ ॥ शीतल स
फल संत सुरपादप, सेवे सदा सुठांइ री ॥ वंठित फ
ले टले अनवंठित, जवसंताप बूजाइ री ॥ साधु० ॥
॥ २ ॥ चतुरविरंची विरंजन चाहे, चरणकमल मक
रंद री ॥ को हरि नरम विहार दिखावे, शुद्ध निरंज
न चंद री ॥ साधु० ॥ ३ ॥ देव असुर इंद्र पद चाहु
न, राज न काज समाज री ॥ संगति साधु निरंतर
पावुं, आनंदधन महाराज री ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणोतेरमुं ॥ राग अलहियो, वेलावल ॥

॥ प्रीतकी रीत नही हो प्रीतम ॥ प्रीत० ॥ मैं तो अ
पनो सरव शृंगारो, प्यारेकी न लई हो ॥ प्री० ॥
॥ १ ॥ मैं वस पियके पिय संग औरके, या गति कि
न सीखई ॥ उपगारी जन जाय मनावो, जो कबु न
ई सो जई हो ॥ प्री० ॥ २ ॥ विरहानलजाला अ
तिहिकठिन है, मोपें सही न गई ॥ आनंदधन यूं सघ
न धारा, तबही दे पठई हो ॥ प्रीत० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सीतेरमुं ॥

साखी ॥ आतम अनुभव रस कथा, प्याला पिया न
जाय ॥ मतवाला तो ढहि परें, निमता परे पचाय ॥ १ ॥

॥ राग वसंत, धमाल ॥

॥ ठबिले लालन नरम कहे, आली गरम करत
कहा बात ॥ टेक ॥ माके आगें मामुकी कोई, वरनन
करय गिवार ॥ अज दू कपटके कोथरी हो, कहा करे
सरधा नार ॥ ठ० ॥ १ ॥ चउगति महेल न ठारिही
हो, कैसें आत जरतार ॥ खानो न पीनो इन बातमें
हो, हसत जानन कहा हाड ॥ ठ० ॥ २ ॥ ममता
खाट परे रमे हो, और निंदे दिन रात ॥ लैनो न
देनो इन कथा हो, जोरही आवत जात ॥ ठ० ॥ ३ ॥
कहे सरधा सुनि सामिनी हो, एतो न कीजें खेद ॥ हेरे
हेरे प्रचु आवही हो, वदे आनंदघन मेद ॥ ठ० ॥ ४ ॥

॥ पद एकोतेरमुं ॥ राग मारु ॥

॥ अनंत अरूपी अविगत सासतो हो, वासतो
वस्तु विचार ॥ सहज विलासी हासी नवी करे हो,
अविनाशी अविकार ॥ अनं० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणी
पंच प्रकारभो हो, दरशनना नव जेद ॥ वेदनी मोहनी
दोष दोय जाणीयें हो, आयुखुं चार विभेद ॥ अ

नं० ॥ १ ॥ शुज अशुज दोय नाम वखाणीयें हो, नीच
 उंच दोय गोत ॥ विघ्न पंचक निवारी आपथी हो,
 पंचम गति पति होत ॥ अनं० ॥ ३ ॥ युगपदजावि
 गुण जगवंतना हो, एकत्रीश मन आण ॥ अवर अ
 नंता परमागमथकी हो, अविरोधी गुण जाण ॥ अ
 नं० ॥ ४ ॥ सुंदर सरूपी सुजग शिरोमणि हो, सुण
 मुज आतमराम ॥ तन्मय तद्वय तसु जकें करी हो,
 आनंदघन पद ठाम ॥ अनं० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बहोतेरमुं ॥ राग केदारो ॥

॥ मेरे माजी मजीठी सुण एक वात, मीठडे लाले
 न विन न रहुं रलीयात ॥ मे० ॥ १ ॥ रंगीत चूनडी
 लडी चीडा, काथा सोपारी अरु पानका बीडा ॥
 मांग सिंदूर सदल करे पीडा, तन कठा मांकोरे विरहा
 कीडा ॥ मे० ॥ २ ॥ जहां तहां हुंहुं ठोल न मित्ता,
 पण जोगी नरविण सब युग रीता ॥ रयणी विहाणी
 दहाडा थीता, अजहू न आवे मोहि ठेहा दीता ॥
 मे० ॥ ३ ॥ तनरंग फूंद नरमली खाट, चून चुन
 कलीयां विवुं घाट ॥ रंग रंगीली फूली पहेरंगी नाट,
 आवे आनंदघन रहे घर घाट ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रहोतेरमुं ॥ राग केदारो ॥

॥ जोले लोगा हूं रडूं तुम जला हांसा, सल्लूणे
साजन विण कैसा घर वासा ॥ जोले० ॥ १ ॥ सेज
सुंहाली चांदणी रात, फूलडी वाडी उर सीतल वात ॥
सघली सहेली करे सुख साता, मैरा तन ताता मूआ
विरहा माता ॥ जो० ॥ २ ॥ फिर फिर जोउं धरणी
आगासा, तेरा ठिपणा प्यारे लोक तमासा ॥ न वळे
तनतें लोही मांसा, सांइडानी बे धरणी ठोडी निरासा
॥ जो० ॥ ३ ॥ विरह कुजावसों मुज कीया, खबर न
पावो तो धिग मेरा जीया ॥ दह्नी वायदो जो बतावै मेरा
कोइ पीया, आवे आनंदघन करुं घर दीया ॥ जो० ॥ ४ ॥

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ या कुबुद्धि कुमरी कौन जात, जहां रीजे चेतन
ग्यान गात ॥ या० ॥ १ ॥ कुत्सित साख विशेष पा
य, परम सुधारस वारि जाय ॥ या० ॥ २ ॥ जीया गु
न जानो और नांही, गळे पडेंगी पलक मांही ॥ या०
॥ ३ ॥ रेखा ठेदे वाही ताम, पढीयें मीठी सुगुण धा
म ॥ या० ॥ ४ ॥ ते आगें अधिकेरी ताही, आनंद
घन अधिकेरी चाही ॥ या० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पंचोत्तरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ लालन बिन मेरो कुन हवाल, समजे न घटकी
 निरुर लाल ॥ ला० ॥ १ ॥ वीर विवेकजुं मांजि मांहि,
 कहा पेट दर्ई आगें ठिपाई ॥ ला० ॥ २ ॥ तुम जावे
 जो सो कीजें वीर, सोइ आन मिलावो लालन धीर ॥
 ला० ॥ ३ ॥ अमरे करे न जात आध, मन चंच
 लता मिटे समाध ॥ ला० ॥ ४ ॥ जाय विवेक विचार
 कीन, आनंदधन कीने अधीन ॥ ला० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बहोत्तरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ प्यारे प्राण जीवन ए साच जान, उत बरकत
 नांही न तिलसमान ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ उनसैं न
 मांगु दिन नांहि एक, इत पकरि लाल ठरि करि विवे
 क ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ उत शठता माया मान फूंब, इत
 रुजुता मृडता जानो कुटुंब ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ उत आसा
 तृष्णा लोच कोह, इत शांत दांत संतोष सोह ॥ प्या
 रे० ॥ ४ ॥ उत कला कलंकी पाप व्याप, इत खेले
 आनंदधन नूप आप ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्योत्तरमुं ॥ राग रामग्री ॥

॥ हमारी लय लागी प्रचु नाम ॥ ह्ण ॥ अंब
 खास अरु गोसल खाने, दर अदालत नहीं काम ॥

॥ ह० ॥ १ ॥ पंच पचीश पच्चास हजारी, लाख कि
रोरी दाम ॥ खाथ खरचे दीये विनु जात है, आनन
कर कर श्याम ॥ ह० ॥ २ ॥ इनके उनके शिवके नजीउके,
उरज रहे विनु ठाम ॥ संत सयाने कोय बतावे, आ
नंदघन गुनधाम ॥ ह० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अछोतेरमुं ॥ राग रामग्री ॥

॥ जगत गुरु मेरा में जगतका चेरा, मिट गया वा
द विवादका घेरा ॥ ज० ॥ १ ॥ गुरुके घरमें नवनि
धि सारा, चेलेके घरमें निपट अंधारा ॥ ज० ॥ गुरुके
घर सब जरित जराया, चेलेकी मढीयांमें ठपर ठाया
॥ ज० ॥ २ ॥ गुरु मोही मारे शब्दकी लाठी, चेलेकी
मति अपराधनी काठी ॥ ज० ॥ गुरुके घरका मरम
न पाया, अकथ कहांनी आनंदघन जाया ॥ ज० ॥ ३ ॥

॥ पद उंगण्याएंशीमुं ॥ राग जयजयवंती ॥

॥ ऐसी कैसी घरवसी, जिनस अनेसी री ॥ याही
घर रहिसें जगवाही, आपद है इसी री ॥ ऐ० ॥ १ ॥
परम सरम देसी, घरमेंउ पेसी री ॥ याही तें मोहनी
मैसी, जगत सगैसी री ॥ ऐ० ॥ २ ॥ कौरीसीगरज
नेसी, गरज न चखेसी री ॥ आनंद घन सुनो
सीबंदी, अरज कहेसी री ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एंशीमु ॥ राग सारंग ॥

॥ चेतन शुद्धातमकूं ध्यावो, परपरचे धामधूमस
दाई, निज परचे सुख पावो ॥ चे० ॥ १ ॥ निजघर
में प्रचुता है तेरी, परसंग नीच कहावो ॥ प्रत्यह रीत
लखी तुम ऐसी, गहियें आप सुहावो ॥ चे० ॥ २ ॥
यावत् तृष्णा मोह है तुमको, तावत् मिथ्या जावो ॥
स्वसंवेद ग्यान लही करिवो, ठंमो भ्रमक विजावो ॥
॥ चे० ॥ ३ ॥ सुमता चेतन पतिकूं इणविध, कहे
निज घरमें आवो ॥ आतम उच्च सुधारस पीये, सुख
आनंद पद पावो ॥ चे० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकाशीमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ चेतन ऐसा ग्यान विचारो, सोहं सोहं सोहं
सोहं, सोहं अणुनबीया सारो ॥ चे० ॥ १ ॥ निश्चय स्वल
कृण अवलंबी, प्रज्ञा बैनी निहारो ॥ इह बैनी मध्य
पाती डुविधा, करे जड चेतन फारो ॥ चे० ॥ २ ॥
तस बैनी कर ग्रहीयें जो धन, सो तुम सोहं धारो ॥ सो
हं जानि दटो तुम मोहं, व्है है समको वारो ॥ चे० ॥
३ ॥ कुजटा कुटिल कुबुद्धि कुमता, ठंमो व्है निज
चारो ॥ सुख आनंद पदे तुम बेसी, स्वपस्कूं निस्ता
रो ॥ चे० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बाशीमुं ॥ राग सूरति टोडी ॥

॥ प्रभु तोसमं अवर न कोऽ खलकमें, हरिहर ब्र
ह्मा विगूते सोतो, मदन जीत्यो तें पलकमें ॥ प्र० ॥

॥ १ ॥ ज्यों जल जगमें अगन बूजावत, वडवानल
सो पीये पलकमें॥ आनंदधन प्रभु वामा रे नंदन,तेरी
हाम न होत हलकमें ॥ प्र० ॥ २ इति पदं ॥

॥ पद त्राशीमुं ॥ राग मारु ॥

॥ निःस्पृह देश शोहामणो, निर्जय नगर उदार
हो ॥ वसे अंतरजामी ॥ निर्मल मन मंत्री वडो, रा
जा वस्तुविचार हो ॥ वसे ॥ १ ॥ केवल कमला
गार हो, सुण सुण शिवगामी ॥ केवल कमलानाथ
हो, सुण सुण निःकामी ॥ केवल कमलावास हो,
सुण सुण शुनगामी॥आतमा तूं चूकीश मां,साहेबा तूं
चूकीश मां,राजिंदा तूं चूकीश मां,अवसर लही जी॥ए
आंकणी ॥ दृढ संतोषकामामोदसा, साधु संगत दृढ
पोल हो ॥ वसे ॥ पोलियो विवेक सुजागतो, आगम
पायक तोल हो ॥ वसे ॥ २ ॥ दृढ विश्वास विता
गरो, सुविनोदी व्यवहार हो ॥ वसे ॥ मित्र वैराग
विहडे नही,क्रीडा सुरति अपार हो ॥ वसे ॥ ३ ॥
जखना बार नदी वहे, समता नीर गंजीर हो ॥ व

सेण॥ ध्यान चहिवचो नख्यो रहे, समपन जाव समीर
हो ॥ वसेण ॥ ४ ॥ उचालो नगरी नहीं, छुष्टुःकाल
न योग हो ॥ वसेण ॥ इति अनीति व्यापे नहीं, आ
नंदघन पद जोग हो ॥ वसेण ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोराशीमुं ॥ इमन राग ॥

॥ लागी लगन हमारी, जिन राज सुजस सुन्यो
में ॥ लाण ॥ टेक ॥ काढूके कहे कबहूं नहि बूटे, लोक
लाज सब मारी ॥ जैसें अमलि अमल करत समे,
लाग रही ज्युं खुमारी ॥ जिण ॥ १ ॥ जैसें योगी
योगध्यानमें, सुरत टरत नहीं टारी ॥ तैसें आनंद
घन अनुहारी, प्रचुके हूं बलिहारी ॥ जिण ॥ २ ॥

॥ पद पंचाशीमुं ॥ राग काफ़ी ॥

॥ वारी हुं बोलडे मीठडे, तुजबिन मुज नहि सरे
रे सूरिजन, लागत और अनीठडे ॥ वाण ॥ १ ॥
मेरे मनकूं जक न परत है, बिनु तेरे मुख दीठडे ॥
प्रेम पीयाला पीवत पीवत, लालन सबदिन नीठडे ॥
वाण ॥ २ ॥ पूरूं कौन कहालूं हूं हूं, किसकूं नेजुं
चीठडे ॥ आनंदघन प्रचु सेजडी पाउंतो, जागे आन
वसीठडे ॥ वाण ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ठासीमुं राग धमाल ॥

॥ सल्लूणे साहेब आवेंगे मेरे, आलीरी वीरविवेक
कहो साच ॥ स० ॥ मोसुं साच कहो मेरीसुं, सुख
पायो के नाहिं ॥ कहांनी कहा कहुं ऊहांकी, हिंमोरे
चतुरगति मांहि ॥ स० ॥ १ ॥ नली नई इत आव
ही हो, पंचम गतिकी प्रीत ॥ सि५ सि५ंत रस पा
ककी हो, देखे अपूरव रीत ॥ स०॥१॥ वीर कहे एती
कहुं हो, आए आए तुम पास ॥ कहे समता परिवारसुं
हो, हम है अनुजव दास ॥ स०॥ ३ ॥ सरधा सुमता
चेतना हो, चेतन अनुजव आंहि ॥ सगति फोरवे
निज रूपकी हो, जीने आनंदघन मांहि ॥ स०॥४॥

॥ पद सत्याशीमुं राग धमाल ॥

॥ विवेकी वीरा सह्यो न परे, वरजो क्युं न आपके
मित्त ॥ वि०॥ टेक ॥ कहा निगोडी मोहनी हो, मोहत
लाल गमार ॥ वाके पर मिथ्या सुता हो, रीज पडे क
हा यार ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रोध मान बेटा जये हो, देत
चपेटा लोक ॥ लोन जमाई माया सुता हो, एह
बढ्यो पर मोक ॥ नि० ॥ २ ॥ गई तिथिकूं कहा
बंजणा हो, पूढे सुमता जाव ॥ घरको सुत तेरे मते
हो, कहालों करत बढाव ॥ वि० ॥ ३ ॥ तव समत

उद्यम कीयो हो, मेढ्यो पूरव साज ॥ प्रीत परमसुं
जोरिकें हो, दीनो आनंदघन राज ॥ वि०॥४॥ इति ॥

॥ पद अठ्याशीमुं ॥ राग धमाल ॥

॥ पूढीयें आली खबर नहीं, आये विवेक वधाय
॥ पू० ॥ ए आंकणी ॥ महानंद सुखकी बरनीका, तुम
आवत हम गात ॥ प्रानजीवन आधारकी हो, खेम
कुशल कहो बात ॥ पू० ॥ १ ॥ अचल अबाधित देवकूं
हो, खेम शरीर लखंत ॥ व्यवहारि घटवध कथा हो,
निहचें सरम अनंत ॥ पू० ॥ २ ॥ बंधमोख निहचें
नही हो, विवहारे लख दोय ॥ कुशल खेम अना
दिही हो, नित्य अबाधित होय ॥ पू० ॥ ३ ॥ सुन
विवेक मुखतें नही हो, बानी अमृत समान ॥ सरधा
समता दो मिली हो, ब्याई आनंदघन तान ॥ पू०॥४॥

॥ पद नेव्याशीमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ चेतन सकल वियापक होइ ॥ सकल० ॥ चे० ॥
सत असत गुन परजय परनति, जाव सुजाव गति
दोइ ॥ चे० ॥ १ ॥ ॥ स्व पर रूप वस्तुकी सत्ता,
सीजे एक न दोइ ॥ सत्ता एक अखंड अबाधित, यह
सिद्धांत पख होइ ॥ चे० ॥ २ ॥ अनवय व्यतिरेक
हेतुको, समजी रूप त्रम खोई ॥ आरोपित सब धर्म

और है, आनंदघन तत सोइ ॥ चेण ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नेबुमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ साखी सोरठो ॥

॥ अण जोवंता लाख, जोवे तो एक नहीं ॥ लाधी जोवन साख, वाहाला विण एलें गइ ॥ १ ॥

॥ महोटी वडूयें मन गमतुं कीधुं ॥ म० ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ पेटमें पेशी मस्तक रेहेंसी, वेरी साही स्वामीजीने दीधुं ॥ म० ॥ १ ॥ खोले बेसी मीतुं बोले, कांइ अनुभव अमृत जल पीधुं ॥ ठानी ठानी ठरकडा करती, ठरती आंखें मनडुं वींधुं ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ लोकालोक प्रकाशक ठैयुं, जणता कारज सीधुं ॥ अंगो अंगें रंगजर रमतां, आनंदघन पद लीधुं ॥ म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकाणुमुं ॥ राग मारु ॥

॥ वारो रे कोइ परघर रमवानो ढाल, न्हानी व हुने परघर रमवानो ढाल ॥ ए आंकणी ॥ परघर रम तां थइ जूठा बोली, देरो धणीजीने आल ॥ वारो० ॥ ॥ १ ॥ अलवे चाला करती हींमे, लोकडां कहे ठे ठी नाल ॥ उलंजडा जण जणना लावे, हैडे उपासे शा ल ॥ वारो० ॥ २ ॥ बाइरे पडोसण जुउने लगारेक,

फोकट खाशे गाल ॥ आनंदघन प्रचुरंगें रमतां, गोरे
गाल ऊबूके जाल ॥ वारो० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बाणुमुं ॥ राग कानडो ॥

॥ दरिसन प्रानजीवन मोहे दीजें ॥ बिन दरिसन
मोहि कल न परतु है, तलफ तलफ तन ठीजे ॥ दरि०
॥ १ ॥ कहा कहुं कहुं कहत न आवत, बिन सेजा
क्युं जीजें ॥ सोहुं खाइ सखी काहु मनावो, आपही
आप पतीजें ॥ दरि० ॥ २ ॥ देवर देरानी सासु जे
ठानी, युंहीं सब मिल खीजें ॥ आनंदघन बिन प्रान
न रहे ठिन, कोडी जतन जो कीजें ॥ दरि० ॥ ३ ॥

॥ पद त्राणुमुं ॥ राग शोरठ ॥ मुने महारा
माधवीयाने मलवानो कोड ॥ ए देशी ॥

॥ मुने महारा नाहलीयाने मलवानो कोड ॥ हुं
राखुं माडी कोइ मुने बीजो वलंगो जोड ॥ मुने० ॥
॥ १ ॥ मोहनीया नाहलीया पांखे महारे, जग स
वि ऊजड जोड ॥ मीठा बोला मन गमला नाहजी
विण, तन मन थाये चोड ॥ मुने० ॥ २ ॥ कांइ
ढोलीयो खाट पठेडी तलाई, जावे न रेसम सोड ॥
अवर सवे महारे जलारे जलेरा, महारे आनंदघन
शिरमोड ॥ मुने० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोराणुमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ निराधार केम मूकी, श्याम मुने निराधार केम
मूकी ॥ कोइ नही हुं कोणखुं बोलुं, सहु आलंबन
टूकी ॥ श्या० ॥ १ ॥ प्राणनाथ तुमें दूर पधाया,
मूकी नेह निराशी ॥ जणजणना नित्य प्रति गुण
गातां, जनमारो किम जासी ॥ श्या० ॥ २ ॥ जेह
नो पद्द लहीने बोलुं, ते मनमां सुख आणे ॥ जेह
नो पद्द मूकीने बोलुं, ते जनम लगें चित्त ताणे
॥ श्या० ॥ ३ ॥ वात तमारी मनमां आवे, कोण
आगल जई बोलुं ॥ ललित खलित खल जो ते देखुं,
आम माल धन खोलुं ॥ श्या० ॥ ४ ॥ घटें घटें ठो
अंतरजामी, मुजमां कां नवि देखुं ॥ जे देखुं ते नजर न
आवे, गुणकर वस्तु विशेषुं ॥ श्या० ॥ ५ ॥ अवधें
केहनी वाटडी जोउं, विण अवधें अति फूहूं ॥
आनंदधन प्रभु वेग पधारो, जिम मन आशा पूहूं
॥ श्या० ॥ ६ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद पचाणुमुं ॥ राग अलश्यो वेलावल ॥

॥ ऐसे जिनचरने चित्त व्याउं रे मना ॥ ऐसे
अरिहंतके गुन गाउं रे मना ॥ ऐसे जिन० ॥ ए
आंकणी ॥ उदर जरनके कारणे रे, गौआं वनमें

जाय ॥ चार चरे चिहुं दिस फिरे, वाकी, सुरति वढ
 रुआमांहे रे ॥ ऐसे जिन० ॥ १ ॥ सात पांच सहे
 लीयां रे, हिल मिल पाणी जाय ॥ ताली दीये खड
 खड हसे रे, वाकी सुरति गगरुआमांहे रे ॥ ऐसे
 जिन० ॥ २ ॥ नटुआ नाचे चोकमें रे, लोक करे लख
 सोर ॥ वांस ग्रही वरतें चढे, वाको चित्त न चले कहुं
 तोर रे ॥ ऐसे जिन० ॥ ३ ॥ जूआरी मनमें जूआ
 रे, कामीके मन काम ॥ आनंदघन प्रभु युं कहे, तुमे
 व्यो जगवंतको नाम रे ॥ ऐसे जि० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ठनुमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ अरी मेरो नाहेरी अतिवारो ॥ में ले जोवन कि
 त जाउं, कुमति पिता बंजना अपराधी, नउवाहे
 व जमारो ॥ अरी० ॥ १ ॥ जलो जानीके सगाई
 कीनी, कौन पाप उपजारो ॥ कहा कहियें इन घर
 के कुटुंबतें, जिन मेरो काम बिगारो ॥ अ० ॥ २ ॥

॥ पद सत्ताणुमुं ॥ राग कव्यास ॥

॥ या पुजलका क्या विसवासा, हे सुपने का वासा
 रे ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ चमतकार विजली दे
 जैसा, पानी बिच पतासा ॥ या देहीका गर्व न कर
 नां, जंगल होयगा वासा ॥ या० ॥ १ ॥ जूठे जन

धन जूठे जोबन, जूठे ह्ये घर वासा ॥ आनंदधन कहे
सबही जूठे, साचा शिवपुर वासा ॥ या० ॥ १ ॥

॥ पद अछाणुमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा, इन पदका करे रे
निवेडा ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ तरुवर एक मूल
बिन ढाया, बिन फूलें फल लागा ॥ शाखा पत्र नही
कडु उनकूं, अमृत गगनें लागा ॥ अ० ॥ १ ॥ तरुवर
एक पंढी दोउ बेठे, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने
जुग चुण चुण खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० ॥
॥ २ ॥ गगन मंमलके अधबिच भूवा, उहां हे अमीका
वासा ॥ सुगुरा होवे सो नर नर पीवे, नगुरा जावे
प्यासा ॥ अ० ॥ ३ ॥ गगन मंमलमें गउआं बिहानी,
धरती दूध जमाया ॥ माखन था सो चिरला पाया,
ठासें जगत नरमाया ॥ अ० ॥ ४ ॥ थड बिनुं पत्र
पत्र बिनुं तुंबा, बिन जीन्या गुण गाया ॥ गावन वा
लेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही बताया ॥ अ० ॥ ५ ॥
आतम अनुभव बिन नहीं जाने, अंतर ज्योति जगावे
॥ घट अंतर परखे सोही मूरति, आनंदधन पद
पावे. ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नवाणुमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू ऐसो ज्ञान बिचारी, वामें कोण पुरुष
कोण नारी ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ बम्ननके घर
न्हाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ पढ
जई रे तुरकडी तो, आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥

॥ १ ॥ ससरो हमारो बालो जोलो, सासू बाल कुंवा
री ॥ पीयुजी हमारो प्होढे पारणीए तो, में हुं फूला
वन हारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नहीं हुं परणी नहीं हुं
कुंवारी, पुत्र जणावनहारी ॥ काली दाढीको में कोइ
नहीं भोज्यो तो, हजुए हुं बाल कुंवारी ॥ अवधू० ॥

॥ ३ ॥ अढी द्वीपमें खाट खटूली, गगन उंशीकुं तजा
ई ॥ धरतीको ठेडो आजकी पीठोडी, तोय न
सोड नराई ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ गगनमंमलमें गाय वी
आणी, वसुधा.दूध जमाई ॥ सउरे सुनो जाइ वलोणुं
वलोवे तो, तत्त्व अमृत कोइ पाई ॥ अवधू० ॥ ५ ॥ नहीं
जाउं सासरीये ने नहीं जाउं पीयरीये, पीयुजीकी
सेज बिठाई ॥ आनंदघन कहे सुनो जाई साधु तो,
ज्योतसें ज्योत मिलाई ॥ अवधू० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकशोमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ बेहेर बेहेर नही आवे, अवसर बेहेर बेहेर नही

आवे ॥ ज्युं जाणे त्युं कर ले जलाई, जनम जबम सुख
पावे ॥ अवसर० ॥ १ ॥ तन धन जोबन सबही जूठो,
प्राण पलकमें जावे ॥ अवसर० ॥ २ ॥ तन बूटे धन
कौन कामको, कायकूं रूपण कहावे ॥ अवसर० ॥ ३ ॥
जाके दिलमें साच बसत हे, ताकूं जूठ न जावे ॥
अवसर० ॥ ४ ॥ आनंदधन प्रभु चलत पंथमें, समरी
समरी गुण गावे ॥ अवसर० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकशो एकमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ मनुष्यारा मनुष्यारा, रिखन देव मनुष्यारा
॥ ए आंकणी ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथम नरेसर, प्र
थम यतिव्रतधारा ॥ रिखन० ॥ १ ॥ नानिराया
मरुदेवीको नंदन, जुगला धर्मनिवारा ॥ रिखन० ॥
॥ २ ॥ केवल लइ प्रभु मुगतें पोहोता, आवागम
न निवारा ॥ रिखन० ॥ ३ ॥ आनंदधन प्रभु इतनी
विनति, आ नव पार उतारा ॥ रिखन० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकशो बेमुं ॥ राग काफी ॥

॥ ए जिनके पाय लाग रे, तुने कहीयें केत्ते ॥ ए
जिनकेण ॥ ए आंकणी ॥ आठोइ जाम फिरे मदमा
तो, मोहनिंदरीयाशुं जाग रे ॥ तुने० ॥ १ ॥ प्रभु
जी प्रीतम विन नही कोइ प्रीतम, प्रभुजीनी पूजा

घणी माग रे ॥ तुने०॥३॥ जवका फेरा वारी करो जि
नचंदा,आनंदघन पाय लाग रे ॥तुने०॥३॥इति पदं॥

॥ पद एकशो त्रणमुं ॥ राग केरबा ॥

॥प्रभु नज ले मेरा दील राजी रे॥प्र०॥ए आंकणी॥
आठ पोहोरकी चोशठ घडीयां, दो घडीयां जिन सा
जी रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ दान पुण्य कबु धर्म कर ले,मोह
मायाकूं त्याजी रे ॥प्र०॥ २ ॥ आनंदघन कहे समज
समज ले,आखर खोवेगा बाजी रे ॥प्र०॥३॥इति पदं॥

॥ पद एकशो चारमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ हठीली आंख्यां टेक न मेटे, फिर फिर देखण
जावं ॥ हठि०॥ए आंकणी॥ ठयल ठबीली प्रिय ठबि,
निरखित तृपति न होई ॥ हट करिंमक हटकूं कची,
देत नगोरी रोई ॥ ह० ॥ १ ॥ मांगर ज्यों टमाके
रही, पीय सबीके धार ॥ लाज मांग मनमें नही,
काने पठेरा मार ॥ ॥ ह०॥ २ ॥ अटक तनक नही
काहूका, हटक न इक तिल कोर ॥ हाथी आप मने
अरे, पावे न महावत जोर ॥ ह० ॥ ३ ॥ सुन
अनुजव प्रीतम बिना, प्राण जात इह गंदि ॥ है
जन आतुर चातुरी, दूर आनंद घन नांदि ॥ ह० ॥
॥ ४ ॥ इति पदं ॥

पद एकशो पांचमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू वैराग बेटा जाया, वाने खोज कुटुंब
सब खाया ॥ अ० ॥ जैए ममता माया खाई, सुख
दुःख दोनों जाई ॥ काम क्रोध दोनोकुं खाई, खाई
तृष्णा बाई ॥ अ० ॥ १ ॥ दुर्मति दादी मत्सर दादा,
मुख देखतही मूत्रा ॥ मंगलरूपी बधाइ वांची, ए
जब बेटा दूवा ॥ अ० ॥ २ ॥ पुण्य पाप पाडोशी
खाये, मान काम दोउ मामा ॥ मोह नगरका राजा
खाया, पीठेही प्रेम ते गामा ॥ अ० ॥ ३ ॥ जाव
नाम धखो बेटाको, महिमा वरण्यो न जाई ॥ आनं
दधन प्रभु जाव प्रगट करो, घट घट रह्यो समाइ ॥
॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इति महामुनि श्रीआनंदधनजी
माहाराज कृत बहोतेरी आदि
कनां पदो समाप्त ॥

॥ श्री चिदानंदाय नमः ॥

॥ अथ श्री चिदानंदजी अपर नाम ।

॥ कपूरचंदजी कृत बहोतेरीनां पद ॥

॥ प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥ राग मारु ॥

॥ पिया परघर मत जावो रे, करि करुणा महा
राज ॥ पिया० ॥ ए आंकणी ॥ कुल मरजादा लो
पकें रे, जे जन परघर जाय॥तिणकुं उन्नय लोक सुण
प्यारे, रंचक शोना नांय ॥ पिया० ॥ १ ॥ कुमतासं
गें तुम रहे रे, आगुं काल अनाद ॥ तामें मोह
दिखा बहु प्यारे, कहा निकाव्यो स्वाद ॥ पिया०
॥ २ ॥ लगत पिया कह्यो माहरो रे, अशुन तुमारे
चित्त ॥ पण मोथी न रहाय रे प्यारे, कहा विना
सुण मित्त ॥ पिया० ॥ ३ ॥ घर अपने बालम कहा
रे, कोण वस्तुकी खोट ॥ फोगट तद केम लीजीयें
प्यारे, शीश जरमकी पोट ॥ पिया० ॥ ४ ॥ सुनि
समताकी विनति रे, चिदानंद महाराज ॥ कुमता
नेह निवारकें प्यारे, लीनो शिवपुर राज॥पिया०॥५॥

॥ पद बीजुं ॥ राग मारु ॥

॥ पिया निज महेल पधारो रे, करी करुणा महा
राज ॥ ए आंकणी ॥ तुम बिन सुंदर साहेबा रे, मो
मन अति दुःख थाय ॥ मनकी व्यथा मनहीं मन
जानत, केम सुखथी कहेवाय ॥ पिया० ॥ १ ॥ बाल
जाव अब वीसरी रे, ग्रहो उचित मरजाद ॥ आत
म सुख अनुभव करो प्यारे, जांगे सादि अनाद ॥
पिया० ॥ २ ॥ सेवककी लज्जा सूधी रे, दाखी साहेब
हाथ ॥ तोसी करो विमासणा प्यारे, अम घर आव
त नाथ ॥ पिया० ॥ ३ ॥ मम चित्त चातक धन तुमे
रे, इस्यो जाव विचार ॥ याचक दानी उन्नय मव्या
प्यारे, शोन्ने न ढील लगार ॥ पिया० ॥ ४ ॥ चिदानंद
प्रभु चित्त गमी रे, सुमताकी अरदास ॥ निजघर घरणी
जाणके प्यारे, सफल करी मन आस ॥ पिया० ॥ ५ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥ राग माहं ॥

॥ सुंअप्या आप विचारो रे, पर पख नेह निवार ॥
सु० ॥ ए आंकणी ॥ पर परणीत पुजल दिसा रे,
तामें निज अजिमान ॥ धारत जीव एही कह्यो प्यारे,
बंधहेतु जगवान ॥ सु० ॥ १ ॥ कनक उपलमें नित्य
रहे रे, दूध मांहे फुनी घीव ॥ तिलसंग तेल सुवास

कुसुम संग, देह संग तेम जीव ॥ सु० ॥ १ ॥ रहत
 हुताशन काष्ठमें रे, प्रगटे कारण पाय ॥ लही कारण
 कारजता प्यारे, सहेजें सिद्धि आय ॥ सु० ॥ ३ ॥ खीर
 नीरकी निन्नता रे, जैसें करत मराल ॥ तैसें चेद झा
 नी लह्यां प्यारे, कटे कर्मकी जाल ॥ सु० ॥ ४ ॥ अज
 कुलवासी केहरी रे, लेख्यो जिम निजरूप ॥ चिदा
 नंद तिम तुमहू प्यारे, अनुभव शुद्ध स्वरूप ॥ सु० ॥ ५ ॥
 ॥ पद चोशुं ॥ राग मारु ॥

॥ बंध निज आप उदीरत रे, अजा कृपाणी न्या
 य ॥ बंध० ॥ ए आंरुणी ॥ ऊकड्यां कियों तोहें
 सांकलां रे, पकड्या कियों तुव हाथ ॥ कोण नूपके
 पहरुये प्यारे, रहत तिहारें साथ ॥ बंध० ॥ १ ॥
 बांदर जिम मदिरा पीये रे, वीबू मंकित गात ॥
 नूत लगे कौतुक करे प्यारे, तिम त्रमको उतपात ॥
 बंध० ॥ २ ॥ कीर बंध्या जिम देखीयें रे, नलिनी
 त्रमर संयोग ॥ इणविध नया जीवकूं प्यारे, बंधन
 रूपी रोग ॥ बंध० ॥ ३ ॥ त्रम आरोपित बंधथी रे,
 परपरिणति संग एम ॥ परवशता दुःख पावते प्यारे,
 मर्कट मूठी जेम ॥ बंध० ॥ ४ ॥ मोह दशा अलगी

करो रे, धरो सु संवर नेख ॥ चिदानंद तब देखीयें
प्यारे, शशि स्वजावकी रेख ॥ बंध० ॥ ५ ॥

॥ पद पांचमुं ॥ राग काफी ॥

॥ मति मत एम विचारो रे, मत मतीयनका जाव
॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ वस्तुगते वस्तु लहो रे, वाद वि
वाद न कोय ॥ सूर तिहां परकाश पीयारे, अंधकार न
वि होय ॥ म० ॥ १ ॥ रूप रेख तिहां नवि घटे रे,
मुझा नेख न होय ॥ जेद ज्ञान दृष्टि करी प्यारे, दे
खो अंतर जोय ॥ म० ॥ २ ॥ तनता मनता बचनता
रे, परपरिणति परिवार ॥ तन मन बचनातीत पी
यारे, निजसत्ता सुखकार ॥ म० ॥ ३ ॥ अंतर शु
द्ध स्वजावमें रे, नहिं विजाव लवलेश ॥ क्रम आरो
पित लक्ष्मी प्यारे, हंसा सहत कलेश ॥ म० ॥ ४ ॥
अंतर्गत निहचें गही रे, कायाथी व्यवहार ॥ चिदा
नंद तव पामीयें प्यारे, जव सायरको पार ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ पद षुं ॥ राग काफी अथवा वेलावल ॥

॥ अकलकला जगजीवन तेरी ॥ अकल० ॥ ए
आंकणी ॥ अंत उदधिथी अनंत गुणो तुव, ज्ञान महा
लघु बुद्धि ज्युं मेरी ॥ अक० ॥ १ ॥ नय अरु जंग नि
रूप विचारत, पूरवधर आके गुण हेरी ॥ विकल्प

करत आग नवि पाये, निर्विकल्पतें होत जये री ॥
 ॥ अ० ॥ १ ॥ अंतर अनुभव विनुं तुव पदमें, युक्ति
 नही कोउ घटत अनेरी ॥ चिदानंद प्रभु करि किरपा
 अब, दीजें ते रस रीऊ जले री ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥ राग काफी तथा वेलावल ॥

॥ जौंलौं तत्त्व न सूज पडे रे ॥ जौं० ॥ तौंलौं मू
 ढ जरम वश नूब्यो, मत ममता ग्रही जगथी लडे
 रे ॥ जौं० ॥ १ ॥ अकर रोग शुन कंप अशुन लख,
 नवसायर इण जांत रडे रे ॥ धान काज जिम मूर
 ख खित्तहड, उखर नूमिको खेत खडे रे ॥ जौं०
 ॥ २ ॥ उचित रीत उलख विण चेतन, निशिदिन र्वो
 टो घाट घडे रे ॥ मस्तक मुकुट उचित मणि अनु
 पम, पग नूषण अज्ञान जडे रे ॥ जौं० ॥ ३ ॥ कु
 मता वश मन वक्र तुरंग जिम, गहि विकल्प मगमां
 हि अडे रे ॥ चिदानंद निज रूप मगन जया, तब कु
 तर्क तोहे नांहि नडे रे ॥ जौं० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद आठमुं ॥ राग काफी तथा वेलावल ॥

॥ आतम परमातम पद पावे, जो परमातम शुं
 लय लावे ॥ आ० ॥ सुणके शब्द कीट नृंगीको, नि
 ज तन मनकी शुद्धि बिसरावे ॥ देखहु प्रगट ध्यानकी

महिमा, सोई कीट जूंगी हो जावे ॥ आ० ॥ १ ॥
 कुसुम संग तिल तेल देख फुनि, होय सुगंध फूलेन
 कहावे ॥ शुक्ति गर्नगत स्वाति उदक होय, मुक्ताफल
 अति दाम धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ पुन पिचुमंद पला
 शादिकमें, चंदनता ज्युं सुगंधथी आवे ॥ गंगामें जल
 आण आणकें, गंगोदककी महिमा नावे ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ पारसको परसंग पाय फुनि, लोहा कनक स्वरू
 प लिखावे ॥ ध्याता ध्यान धरत चित्तमें इम, ध्येयरूप
 में जाय समावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नज समता ममताकुं
 तज जन, शुद्ध स्वरूपथी प्रेम लगावे ॥ चिदानंद
 चित्त प्रेम मगन जया, डुविधा नाव सकल मिट
 जावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग काफी तथा वेलावल ॥

॥ अरज एक घवडीचा स्वामी, सुणहुं कृपानिधि
 अंतरजामी ॥ अ० ॥ अति आनंद जयो मन मेरो,
 चंड वदन मुम दर्शन पामी ॥ अ० ॥ १ ॥ हुं संसा
 र असार उदधि पडयो, तुम प्रचु जये पंचम गति गा
 मी ॥ कबहुं उचित नही स्वामीकूं, चित्त धरवी सेवककी
 स्वामी ॥ अ० ॥ २ ॥ हुं रागी तुं निपट निरागी, तुम
 हो निरीह निर्मम निष्कामी ॥ पण तोहे कारण रूप

निरख सम, आतम नयो आतम गुणरामी ॥ अ० ॥
 ॥ ३ ॥ गोप बिरुद निरजामक माहण, प्रगट धखो
 तुम त्रिचुवन नामी ॥ तार्ते अवश्य तारजो मोकूं, इम
 विलोकि धीरज चित्त ठामी ॥ अ० ॥ ४ ॥ युग पूरण
 निधान शशि संवत, (१९०३) जावनगर जेटे गुण
 धामी ॥ चिदानंद प्रचु तुम किरपाथी, अनुजव सा
 यर सुख विसरामी ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद दशमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ मंदविषय शशी दीपतो, रवि तेज घनेरो ॥
 आतम सहज स्वजावथी, विजाव अंधेरो ॥ मंद० ॥ १ ॥
 जाग जीया अब परिहरो, नववास वसेरो ॥ नववा
 सी आशा ग्रही, नयो जगको चेरु ॥ मंद० ॥ २ ॥
 आश तजी निराशता, पद सास ताहेरो ॥ चिदानंद
 निज रूपको, सुख जाण नलेरो ॥ मंद० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ जोग जुगति जाण्या विना, कहा नाम धरावे ॥
 रमापति कहे रंककूं, धन हाथ न आवे ॥ जो०
 ॥ १ ॥ जेख धरी माया करी, जगकूं जरमावे ॥ पूरण
 परमानंदकी, सुधि रंच न पावे ॥ जो० ॥ २ ॥ मन
 मुंढ्या विन मुंढकूं, अति घेट मुंढावे ॥ जटाचूट

शिर धारकें, कोउ कान फरावे ॥ जो० ॥ ३ ॥ ऊर्ध्व
बाहु अधोमुखें, तन ताप तपावे ॥ चिदानंद समझ्या
विना, गिणती नवि आवे ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ आज सखी मेरे वालमा, निज मंदिर आये ॥
अति आनंद हिये धरी, हसी कंठ लगाये ॥ आ० ॥
॥ १ ॥ सहज स्वभाव जलें करी, रुचि धर नवराये ॥
थाल नरी गुण सुखडी, निज हाथ जिमाये ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ सुरजि अनुभव रस नरी, बीडा खवराये ॥
चिदानंद मिल दंपती, मनोवंडित पाये ॥ आ० ॥ ३ ॥

॥ पद तेरमुं ॥ राग विनास ॥

॥ जूठी जगमाया नर केरी काया, जिम बादरकी
ढाया माइ री ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञानांजन कर खोल
नयण मम, सदगुरु इणे विध प्रगट लखाइ री ॥ जू० ॥
॥ १ ॥ मूल विगत विषवेल प्रगटि इक, पत्ररहित
त्रिचुवनमें ठाइ री ॥ तास पत्र चुण खात मिरगवा,
मुखबिन अचरिज देखे हुं आइ री ॥ जू० ॥ २ ॥ पुरु
ष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुंसक घरमें समाइ
री ॥ पुत्र जुगल जाये तिण बाला, ते जगमांहे अ
धिक दुःखदाइ री ॥ जू० ॥ ३ ॥ कारण बिन कार

जकी सिद्धि, केम नई मुख कही नवि जाइ री ॥
चिदानंद एम अकल कलाकी, गति मति कोउ विरले
जन पाइ री ॥ जू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चौदमुं ॥ राग विजास ॥

॥ देखो नवि जिनजीके जुग, चरन कमल नीके ॥
देखो० ॥ ए आंकणी ॥ जिम उदयाचल उदय नयो
रवि, तिम नख माननके ॥ देखो० ॥ १ ॥ नीलोत्पल सम
शोच चरण ठबि, रिष्ट रतनहूके ॥ देखो० ॥ २ ॥
सुरजि सुमनवर यहुकर्दम कर, अर्चित देवनके ॥
देखो० ॥ ३ ॥ निरख चरन मन हरख नयो अति, वामा
नंदजूके ॥ देखो० ॥ ४ ॥ चिदानंद अब सकल
मनोरथ, सफल नये मनके ॥ देखो० ॥ ५ ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ अखीयां सफल नई, अलि निरखत नेमिजिनं
द ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ पद्मासन आसन प्रभु
सोहत, मोहत सुरनर वृंद ॥ घूघरबाला अलख अ
नोपम, मुख मानुं पूनम चंद ॥ अ० ॥ १ ॥ नयन
कमलदल शुक्रमुख नासा, अधर बिंब सुख कंद ॥
कुंदकली ज्युं दंति पंति, रसना दल शोजा अमंद ॥
अ० ॥ २ ॥ कंबुग्रीव जुज कमल नाजकर, रक्तोत्पल

अनुचंद ॥ हृदय विशाल थालकटि केहरी, नानिस
रोवर खंद ॥ अ० ॥ ३ ॥ कदली खंज युग चरनसरोज
जस, निशिदिन त्रिभुवन वंद ॥ चिदानंद आनंद मूर
ति, ए शिवादेवीनंद ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद शोलमुं ॥ राग जैरव ॥

॥ विरथा जनम गमायो ॥ मूरख विर० ॥ ए आं
कणी ॥ रंचक सुखरस वश होय चेतन, अपनो मू
ल नसायो ॥ पांच मिथ्यात धार तुं अजहुं, साच नेद
नवि पायो ॥ मू० ॥ १ ॥ कनक कामिनी अरु एहथी,
नेह निरंतर लायो ॥ ताहुथी तुं फिरत सोरांनो, क
नकबीज मानुं खायो ॥ मू० ॥ २ ॥ जनम जरा
मरणादिक दुःखमें, काल अनंत गमायो ॥ अरहट
घटिका जिम कहो याको, अंत अजहुं नवि आयो ॥
मू० ॥ ३ ॥ लख चोराशी पेहेखा चोलना, नव नव
रूप बनायो ॥ बिन समकित सुधारसं चारख्या, गि
एती कोउ न गिणायो ॥ मू० ॥ ४ ॥ एती पर नवि
मानत मूरख, ए अचरिज चित्त आयो ॥ चिदानंद ते
धन्य जगतमें, जिणे प्रभुशुं मन लायो ॥ मू० ॥ ५ ॥

• ॥ पद सत्तरमुं ॥ राग जैरव ॥

॥ जग सपनेकी माया रे ॥ नर जग० ॥ ए आंक

एणी ॥ सुपने राज पाय कोउ रंक ज्युं, करता काज
 मन जाया ॥ उधरत नयन हाथ लख खपर, मन
 हुं मन पढताया रे ॥ नर जग० ॥ १ ॥ चपला
 चमत्कार जिम चंचल, नरनव सूत्र बताया ॥ अंजलि
 जलसम जगपति जिनवर, आयु अथिर दरसाया
 रे ॥ नर जग० ॥ २ ॥ यौवन संध्याराग रूप फुनि, मल
 मलिन अति काया ॥ विणसत जास विलंब न रंच
 क, जिम तरुवरकी ढाया रे ॥ नर जग० ॥ ३ ॥ स
 रिता वेग समानजु संपति, स्वारथ सुत मित जाया ॥
 आमिष लुब्ध मीन जिम तिन संग, मोहजाल बंधा
 या रे ॥ नर जग० ॥ ४ ॥ ए संसार असार सार पण,
 यामें इतना पाया ॥ चिदानंद प्रभु सुमरनसेंती, धरीयें
 नेह सवाया रे ॥ नर जग० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अठारमुं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ मान कहा अब मेरा मधुकर ॥ मान० ॥ ए
 आंकीणी ॥ नाजिनंदके चरण सरोजमें, कीजें अचल
 बसेरारे ॥ परिमल तास लहत तन सहेजें, त्रिविध
 पाप उतेरारे ॥ मान० ॥ १ ॥ उदित निरंतर ज्ञान जान
 जिहां, तिहां न मिथ्यात अंधेरारे ॥ संपुठ होत नही
 तातें कहा, सांज कहा सवेरार ॥ मान० ॥ २ ॥ नहिंतर

पठतावोगे आखर, बीत गया यो वेरारे ॥ चिदानंद प्रचु
पदकज सेवत, बहुरि न होय नव फेरारे ॥ मा० ॥ ३ ॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ जूब्यो जमत कहा बे अजान ॥ जूब्यो ज० ॥ ए
आंकणी ॥ आल पंपाल सकल तज मूरख, कर अनुज
व रस पान ॥ जू० ॥ १ ॥ आय कृतांत गहेगो इकदिन,
हरि मृग जेम अचान ॥ होयगो तन धनथी तूं न्यारो,
जेम पाक्यो तरुपान ॥ जू० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी
सुतसेंती, गरज न सरत निदान ॥ चिदानंद ए वचन
हमारो, धर राखो प्यारे कान ॥ जू० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद वीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ संतो अचरिज रूप तमासा ॥ संतो० ॥ ए आं
कणी ॥ कीडीके पग कुंजर बांध्यो, जलमें मकर पी
यासा ॥ संतो० ॥ १ ॥ करत हलाहल पान रुची धर,
तज अमृत रस खासा ॥ चिंतामणि तजी धरत चि
त्तमें, काचशकलकी आसा ॥ संतो० ॥ २ ॥ बिन
बादर बरखा अति बरसत, बिनदिग वहत बतासा ॥
वज्र गलत हम देखा जलमें, कोरा रहत पतासा ॥
॥ संतो० ॥ ३ ॥ बेर अनादि पण ऊपरथी, देखत

लगत बगासा ॥ चिदानंद सोही जन उत्तम, काप
त याका पासा ॥ संतो० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ कर ले गुरुगम ज्ञान विचारा ॥ कर ले० ॥ ए
आंकणी ॥ नाम अथ्यातम ठवण इव्यथी, जाव अ
थ्यातम न्यारा ॥ कर० ॥ १ ॥ एक बुंद जलथी ए
प्रगटथा, श्रुत सायर विस्तारा ॥ धन्य जिनोनें उलट उ
दधिकूं, एक बुंदमें मारा ॥ कर० ॥ २ ॥ बीज रुची
धर ममता परिहर, लही आगम अनुसारा ॥ परपख
थी लख इणविध अप्पा, अहिकंचुक जिम न्यारा ॥
॥ कर० ॥ ३ ॥ जास परत त्रम नासहु तासहु, मि
थ्या जगत पसारा ॥ चिदानंद चित्त होत अचल इ
म, जिम नज धूका तारा ॥ कर० ॥ ४ ॥ इति पदं॥

॥ पद बावीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ अब हम ऐसी मनमें जाणी ॥ अ० ॥ ए आं
कणी ॥ परमारथ पथ समज विना नर, वेद पुराण क
हाणी ॥ अ० ॥ १ ॥ अंतरलहू विगत उपरथी, क
ष्ट करत बहु प्राणी ॥ कोटि यतन कर तूप लहत न
हिं, मथतां निशिदिन पाणी ॥ अ० ॥ २ ॥ लवण
पूतली थाह लेणकूं, सायरमांहि समाणी ॥ तामें

मिल तडुप नई ते, पलट कहे कोण वाणी ॥
अ० ॥ ३ ॥ खटमत मिल मातंग अंग लख, युक्ती
बहुत वखाणी ॥ चिदानंद सरवंग विलोकी, तत्त्वा
रथ व्यो ताणी ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ सोहं सोहं सोहं सोहं, सोहं सोहं रटना लगी
री ॥ सो० ॥ ए आंकणी ॥ इंगला पिंगला सुखमना सा
धके, अरुण प्रतिथी प्रेम पगी री ॥ वंकनाल खट
चक्र नेदके, दशमे द्वार शुन ज्योति जगी री ॥ सोहं० ॥
॥ १ ॥ खुलत कपाट घाट निज पायो, जनम जरा
जय नीति जगी री ॥ काच शंकल दे चिंतामणि ले,
कुमता कुटिलकूं सहज ठगी री ॥ सोहं० ॥ २ ॥
व्यापक सकल स्वरूप लख्यो इम, जिम नजमें मग
लहत खगी री ॥ चिदानंद आनंद मूरति, निरख
प्रेम नर बुद्धि थगी री ॥ सोहं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ अब लागी अब लागी अब लागी अब लागी,
अब लागी अब लागी अब प्रीत सही री ॥ अब० ॥
ए आंकणी ॥ अंतर्गतकी बात अली सुन, मुखथी
मोपें न जात कही री ॥ चंदचकोरकी उपमा इण समे,

साच कहुं तोहे जात वही री ॥ अ० ॥ १ ॥ जलधर
 बुंद समुद्र समाणी, जिन्न करत कोउ तास मही री ॥
 द्वैत नावकी टेव अनादि, षिनमें ताकुं आज दही
 री ॥ अ० ॥ १ ॥ विरहव्यथा व्यापत नही आली, प्रेम
 धरी पियु अंक ग्रही री ॥ चिदानंद चूके किम चातुर,
 ऐसो अवसर सार लही री ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पञ्चीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ प्रीतम प्रीतम प्रीतम प्रीतम, प्रीतम प्रीतम क
 रती में हारी ॥ प्री० ॥ ए आंकणी ॥ ऐसे नितुर जये
 तुम कैसे, अजहुं न लीनी खबर हमारी ॥ कवण जां
 त तुम रीऊत मोपें, लख न परत गति रंच तिहा
 री ॥ प्री० ॥ १ ॥ मगन जए नित्य मोह सुता सं
 ग, विचरत हो स्वहृंद विहारी ॥ पण इण वातनमें
 सुण वालम, शोना नही जगमांहि तिहारी ॥ प्री०
 ॥ १ ॥ जो ए वात तात मम सुणीयें, मोहरायकी क
 रीहे खुवारी ॥ मम पीयर परिवारुके आगल, कुम
 ता कहा ते रंक बिचारी ॥ प्री० ॥ ३ ॥ कोटि जतन करी
 धोवत निशदिन, उजरी न होवत कामर कारी ॥ तिम
 ए साची शिखामण मनमां, धारत नांही नेक अना
 री ॥ प्री० ॥ ४ ॥ कहत विवेक सुमति सुण जिम

तिम, आतुर होयने बोलत प्यारी ॥ चिदानंद निज घ
र आवेंगे, दोय दिनामें उमर सारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥

॥ पद षष्ठीशमुं ॥ राग आशावरी तथा गोडी ॥

॥ अवधू निरपक्व विरला कोइ ॥ देख्या जग
सद्दु जोई ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ समरस जाव
जला चित्त जाके, थाप उथाप न होई ॥ अविना
शीके घरकी बातां, जानेंगे नर सोई ॥ अव०
॥ १ ॥ राव रंकमें जेद न जाने, कनक उपल सम
लेखे ॥ नारी नागणीको नही परिचय, तो शिवमं
द्विर देखे ॥ अव० ॥ २ ॥ निंदा स्तुति श्रवण सुणी
ने, हर्ष शोक नवि आणे ॥ ते जगमें जोगीसर पूरा,
नित्य चढते गुणठाणे ॥ अव० ॥ ३ ॥ चंड समान
सौम्यता जाकी, सायर जेम गंजीरा ॥ अप्रमत्तें नारं
म परें नित्य, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अव० ॥
॥ ४ ॥ पंकज नाम धराय पंकजुं, रहत कमल
जिम न्यारा. ॥ चिदानंद इस्या जन उत्तम, सो साहे
बका प्यारा ॥ अव० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥ राग बिहागवा टोडी ॥

॥ लघुत्ता मेरे मन मानी, लइ गुरुगम ज्ञान नि
शानी ॥ लघु० ॥ ए आंकणी ॥ मद अष्ट जिनांने

धारे, ते. डुर्गति गये बिचारे ॥ देखो जगतमें प्रानी,
 दुःख लहत अधिक अजिमानी ॥ लघु० ॥ १ ॥ शशी
 सूरज बडे कहावे, ते राहुके बस आवे ॥ तारा गण
 लघुता धारी, स्वरजानु नीति निवारी ॥ लघु० ॥ २ ॥
 ठोटी अति जोयणगंधी, लहे खटरस स्वाद सुगं
 धी ॥ करटी मोटाइ धारे, ते ठार शीश निज मारे
 ॥ लघु० ॥ ३ ॥ जब बालचंड होइ आवे, तब सहु
 जग देखण धावे ॥ पूनमदिन बडा कहावे, तव खीण
 कला होय जावे ॥ लघु० ॥ ४ ॥ गुरुवाइ मनमें
 वेदे, उप श्रवण नासिका बेदे ॥ अंगमांहे लघु कहावे,
 ते कारण चरण पूजावे ॥ लघु० ॥ ५ ॥ शिच्छु राजधा
 ममें जावे, सखी हिलमिल गोद खिलावे ॥ होय बडा
 जाए नवि पावे, जावे तो सीस कटावे ॥ लघु० ॥ ६ ॥
 अंतर मद जाव वहावे, तब त्रिचुवन नाथ कहावे ॥
 इम चिदानंद ए गावे, रहणी बिरला कोउ पावे
 ॥ लघु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अछावीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ कथणी कथे सहु कौइ, रहणी अतिडुर्जन हो
 इ ॥ कथ० ॥ ए आंकणी ॥ शुक्र रामको नम वखा
 ऐ, नवि परमारथ तस जाणे ॥ या विध जणी वेद

सुणावे, पण अकल कला नवि पावे ॥ कथ० ॥ १ ॥
 षट्त्रीश प्रकारें रसोई, मुख गणतां तृप्ति न होई ॥
 शिशु नाम नही तस लेवे, रस स्वादत सुख अति
 लेवे ॥ कथ० ॥ २ ॥ बंदीजन कडखा गावे, सुणी सूर
 सीस कटावे ॥ जब रुंढमूंमता नासे, सहु आगल
 चारण नासे ॥ कथ० ॥ ३ ॥ कहणी तो जगत मजू
 री, रहणी हे बंदी हजूरी ॥ कहणी साकर सम मीठी,
 रहणी अति लागे अनीठी ॥ कथ० ॥ ४ ॥ जब रह
 णीका घर पावे, कथणी तब गिणती आवे ॥ अब
 चिदानंद इम जोई, रहणीकी सेज रहे सोई ॥
 ॥ कथ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद उगणत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ ज्ञानकला घट नासी ॥ जाकूं ज्ञा० ॥ ए आंक
 णी ॥ तन धन नेह नही रह्यो ताकूं, िनमें जयो उ
 दासी ॥ जा० ॥ १ ॥ हुं अविनाशी नाव जगतके,
 निश्चें सकल विनाशी ॥ एहवी धार धारणा गुरुगम,
 अनुभव मारग पासी ॥ जा० ॥ २ ॥ में मेरा ए मो
 ह जनित जस, ऐसी बुद्धि प्रकाशी ॥ ते निःसंग पग
 मोह सीस दे, निश्चें शिवपुर जासी ॥ जा० ॥ ३ ॥ सुम
 ता नई सुखी इम सुनके, कुमता नई उदासी ॥

चिदानंद आनंद लह्यो इम, तोर करमकी पासी
॥ जा० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अनुनव आनंद प्यारो ॥ अब मोहे, अनुन
व० ॥ ए आंकणी ॥ एहं विचार धार तूं जडथी, कन
क उपल जिम न्यारो ॥ अ० ॥ १ ॥ बंधहेतु रागा
दिक परिणती, लख परपख सहु न्यारो ॥ चिदा
नंद प्रभु कर किरपा अब, नव सायरथी तारो ॥
॥ अ० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ उ घट विणसत वार न लागे ॥ उ घ० ॥ ए आं
कणी ॥ याके संग कहा अब मूरख, षिन षिन अ
धिको पागे ॥ उ० ॥ १ ॥ काचा घडा काचकी शीशी,
लागत ठणका जांगे ॥ सडण पडण विध्वंस धरम
जस, तसथी निपुण नीरागे ॥ उ० ॥ २ ॥ आधि व्या
धि व्यथा दुःख इण नव, नरकादिक फुनि आगें ॥
मगहु न चलत संगविणा पोष्या, मारगहुमें त्यागे ॥ उ० ॥
॥ ३ ॥ मदठक ठाक गहेल तज विरला, गुरु किरपा
कोउ जागे ॥ तन धन नेह निवारि चिदानंद, चली
खें ताके सागे ॥ उ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥.

॥ अवधू पियो अनुंजव रस प्याला, कहत प्रेम
मतिवाला ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ अंतर सप्तधात
रस नेदी, परम प्रेम उपजावे ॥ पूरव जाव अवस्था
पलटी, अजब रूप वरसावे ॥ अ० ॥ १ ॥ नख शिख
रहत खुमारी जाकी, सजल सधन घन जैसी ॥ जिन
ए प्याला प्रिया तिनकूं, और केफरति कैसी ॥ अ० ॥
॥ २ ॥ अमृत होय हलाहल जाकूं, रोग शोक नवि
व्यापे ॥ रहत सदा गरकाव निसामें, बंधन ममता
कापे ॥ अ० ॥ ३ ॥ सत्य संतोष हीयामें धारे, आतम
काज सुधारे ॥ दीन जाव हिरंदे नही आणे, अपनो
बिरुद संजारे ॥ अ० ॥ ४ ॥ जावदया रणथंन रोप
के, अनहद तूर बजावे ॥ चिदानंद अतुलीबल राजा,
जीत अरि घर आवे ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ मारग साचा कौउ न बतावे ॥ जासुं जाय पूढी
यें तेतो, अपनी अपनी गावे ॥ मारग० ॥ ए आंक
णी ॥ मतवारा मतवाद वाद धर, थापत निज मत
नीका ॥ स्यादवाद अनुंजव बिन ताका, कथन ल
गत मोहे फीका ॥ मा० ॥ १ ॥ मतवेदांत ब्रह्मपद

ध्यावत; निश्चय पख उरधारी ॥ मीमांसक तो कर्म
 बदे ते, उदय जाव अनुसारी ॥ मा० ॥ १ ॥ कहत
 बौद्ध ते बुद्ध देव मम, कृणिक रूप दरसावे ॥ नैया
 यिक नयवाद ग्रही ते, करता कोउ ठेरावे ॥ मा०
 ॥ ३ ॥ चारवाक निज मनःकल्पना, शून्य वाद
 कोउ ठाणे ॥ तिनमें नये अनेक चेद ते, अपणी अपणी
 ताणे ॥ मा० ॥ ४ ॥ नय सरवंग साधना जामें, ते
 सरवंग कहावे ॥ चिदानंद ऐसा जिन मारग, खोजी
 होय सो पावे ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू खोलि नयन अब जोवो ॥ डिग मुडित
 कहा सोवो ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ मोह
 निंद सोवत तूं खोया, सरवस माल अपाणा ॥ पांच
 चोर अजहुं तोय लूंटत, तास मरम नहिं जाण्या ॥
 अवधू० ॥ १ ॥ मली चार चंमाल चोकडी, मंत्री
 नाम धराया ॥ पाई केफ पीयाला तोहे, सकल मुलक
 उग खाया ॥ अवधू० ॥ २ ॥ शत्रुराय महाबल
 जोक्षा, निज निज सेन सजाये ॥ गुणठाणेमें बांध
 मोरचे, घेखा तुम पुर आये ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ परमादी
 तूं होय पियारे, परवशता दुःख पावे ॥ गया राज पुर

सारथसेंती, फिर पाठा घर आवे ॥ अथधू० ॥ ४ ॥
सांजली वचन विवेक मित्तका, ठिनमें निजदल जो
डया ॥ चिदानंदएसी रामत रमतां, ब्रह्म बंका गढ
तोडया ॥ अथधू० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥ राग प्रमाती ॥

॥ वस्तुगतें वस्तुको लक्षण, गुरुगम विण नही पा
वे रे ॥ गुरुगम विन नवि पावे कोउ, जटक जटक न
रमावे रे ॥ व० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नवन आरीसे श्वान
कूकडा, निज प्रतिबिंब निहारे रे ॥ इतर रूप मनमां
हे बिचारी, महा जुद्ध विस्तारे रे ॥ व० ॥ २ ॥ नि
र्मल फिटक शिला अंतर्गत, करिवर लख परठांहि
रे ॥ दसन तुराय अधिक दुःख पावे, द्वेष धरत दिल
मांहि रे ॥ व० ॥ ३ ॥ ससले जाय सिंहकूं पकडयो,
दूजो दीयो देखाई रे ॥ निरख हरि ते जाण दूसरो,
पडयो ऊंष तिहां खाई रे ॥ व० ॥ ४ ॥ निजठाया
वेताल नरस धर, मरत बाल चित्तमांहिं रे ॥ रज्जु
सर्प करी कोउ मानत, जौलों समजत नांहिं रे ॥ व० ॥
५ ॥ नलिनी च्रम मर्कट मूठी जिम, च्रमवश अति
दुःख पावे रे ॥ चिदानंद चेतन गुरुगम विन, मृग तृ
ष्णा धरी धावे रे ॥ व० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रिंशत् ॥ राग जैरव ॥

॥ लाल ख्याल देख तेरे, अचरिज मन आवे ॥ ला
ल ॥ ए आंकणी ॥ धारे बहु रूप विन्न, मांहे होय
रंक नूप ॥ आपतो अरूप सहु, जगमें कहावे ॥ ला ॥
॥ १ ॥ करता अकरताहु, हरताके जरता ज्युं ॥ ए
सा हे जो कोण तोहे, नाम ले बतावे ॥ ॥ ला ॥ १ ॥
एकहुमें एक है, अनेक है अनेकहुमें ॥ एक न अनेक
कहु, कह्यो नही जावे ॥ ला ॥ २ ॥ उपजे न उपज
त, मूठ न मरत कहु ॥ खटरस जोग करे, रंचहु न
खावे ॥ लाल ॥ ४ ॥ परपरणीत संग, करत अनो
षेखे रंग ॥ चिदानंद प्यारे, नट बाजीसी दिखावे ॥
॥ ला ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद साड्त्रिंशत् ॥ राग जैरव ॥

॥ जाग रे बटाउ अब, नई जोर वेरा ॥ जा ॥
॥ ए आंकणी ॥ जया रविका प्रकाश, कुमुदहू अए वि
कास ॥ गया नाश प्यारे मिथ्या, रेनका अंधेरा ॥
॥ जा ॥ १ ॥ सूता केम आवे घाट, चालवी जरूर
वाट ॥ कोइ नांही मित्त, परदेशमें ज्युं तेरा ॥ जा ॥
॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पीठें पिठतादो थाय ॥
चिदानंद निहचें, ए मान कहा मेरा ॥ जा ॥ ३ ॥

॥ पद आडत्रीशमुं ॥ राग नैरव ॥

॥ चालणां जरूर जाकूं, ताकूं कैसा सोवणां ॥
 ॥ चा० ॥ ए आंकणी ॥ नया जब प्रातःकाल, मा
 ता धवरावे बाल ॥ जग जन करत हे, सकल मुख
 धोवणां ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरजिके बंध बूटे, धूवड
 जये अपूटे ॥ ग्वाल बाल मिलके, बिलोवत वलोवणां ॥
 चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग, तूंची तेरे काजलाग
 ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा न आयु खोवणां ॥ ३ ॥

॥ पद उंगणचालीशमुं ॥ राग नैरव ॥

॥ जाग अवलोक निज, शुद्धता स्वरूपकी ॥ जा
 ग० ॥ ए आंकणी ॥ जामें रूप रेख नांही, रंच पर
 पंच ठांही ॥ धारे नही ममता, सुगुण जवकूपकी ॥
 ॥ जा० ॥ १ ॥ जाकी है अनंत ज्योत, कबहुं न मंद
 होत ॥ चार ज्ञान ताके सोत, उपमा अनूपकी ॥
 ॥ जा० ॥ २ ॥ उलट पलट ध्रुव जान, सत्तामें
 बिराजमान. ॥ शोना नांही कहि जात, चिदानंद
 चूपकी ॥ ॥ जा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चालीशमुं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ ऐसा ग्यान बिचारो प्रीतम, गुरुमुख शैली धा
 री रे ॥ ऐ० ॥ ए आंकणी ॥ स्वामीकी शोना करे सा

री, तेतो बाल कुमारी रे ॥ जे स्वामी ते तात तेहनो,
 कह्यो जगत हितकारी रे ॥ ऐसा० ॥ १ ॥ अष्ट दी
 करी जाई बाला, ब्रह्मचारिणी नोवे रे ॥ परणावी पू
 रणचंदाथी, एक सेज नवि सोवे रे ॥ ऐसा० ॥ २ ॥
 अष्ट कन्याका सुत वली जाये, द्वादश ते वली सोई
 रे ॥ ते जगमांहे अजनमे कहीयें, करता नवि तस
 कोई रे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ मात तात सुत एकदिन जन
 मे, ठोटे बडे कहावे रे ॥ मूल तिनोंका सद्गु जग
 जाणे, शाखा जेद न पावे रे ॥ ऐसा० ॥ ४ ॥ जो इण
 के कुल केरी शाखा, जाणे खोज गमावे रे ॥ खोज जा
 य जगमे तो पण ते, सद्गुथी बडे कहावे रे ॥ ऐसा०
 ॥ ५ ॥ अथवा नर नारी नपुंसक, सद्गुकी ए ठे माता
 रे ॥ षटमतबाल कुमारी बोजत, ए अचरिजकी बा
 ता रे ॥ ऐसा० ॥ ६ ॥ लोक लोकोत्तर सद्गु कारजमें,
 या बिन काम न चाले रे ॥ चिदानंद ए नारिचुं रमण,
 मुनि मनथी नवि टाले रे ॥ ऐसा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥
 ॥ पद एकतालीशमुं ॥ राग प्रजाती ॥ उठोने मोरा
 आतमराम, जिनमुख जोवा जश्यें रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे म्मरग लागो
 रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संजम दानादिक सद्गु,

गिणति एक न आवे रे ॥ इंदिय सुखमें जौंलौं ए मन,
 वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विषय ० ॥ १ ॥ एक एकके कारण
 चेतन, बहुत बहुत दुःख पावे रे ॥ तेतो प्रगटपणे ज
 गदीश्वर, इण विध जाव लखावे रे ॥ विषय ० ॥ २ ॥
 मन्मथ वश मातंग जगतमें, परवशता दुःख पावे रे ॥
 रसनालुब्ध होय ऊख मूरख, जाल पडयो पिठतावे
 रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ घ्राण सुवास काज सुन नमरा, संपुट
 मांहे बंधावे रे ॥ ते सरोज संपुट संयुत फुन, करटीके
 मुख जावे रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख पतंगा,
 पडत दीपमां जाई रे ॥ देखो याकूं दुःख कारनमें, न
 यन जये है सहाई रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ श्रोत्रेंदिय
 आसक्त मिरगला, षिनमें शीश कटावे रे ॥ एक एक
 आसक्त जीव एम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ वि० ॥
 ॥ ६ ॥ पंच प्रबल वर्ते नित्य जाकूं, ताकूं कहा ज्युं
 कहीयें रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीने, निज स्वभाव
 में रहीयें रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बहैतालीशमुं ॥ राग नैरव ॥

॥ अजित जिनंद देव, थिरचित्त ध्याईयें ॥ अ० ॥ थिरचि
 त्त ध्याईयें, परम सुख पाईयें ॥ अ जि० ॥ ए आंकणी ॥
 अत्रि नीको जाव जल, विगत ममत भल ॥ ऐसो

ज्ञानसरथी, सुजल नर लाईयें ॥ अजि० ॥ १ ॥ के
 शर सुमति घोरी, नरी नावना कचोरी ॥ कर मन जो
 री अंग, अंगीयां रचाइयें ॥ अजि० ॥ २ ॥ अजय
 अखंड क्यारी, सींचके विवेक वारी ॥ सहज सुजावमें,
 सुमन निपजाईयें ॥ अजि० ॥ ३ ॥ ध्यान धूप ज्ञान
 दीप, करी अष्टकर्म जीप ॥ डविध सरूप तप, नैवेद्य
 चढाईयें ॥ अजि० ॥ ४ ॥ लीजीयें अमल दल, ढो
 ईयें सरस फल ॥ अरुत अखंड बोध, स्वस्तिक लखाई
 यें ॥ अजि० ॥ ५ ॥ अनुभव जोर जयो, मिथ्यामत
 दूर गयो ॥ करि जिन सेव इम, गुण फुनि गाईयें ॥ अ
 जि० ॥ ६ ॥ इणविध नांव सेव, कीजियें सुनित्यमेवा
 चिदानंद प्यारे इम, शिवपुर पाईयें ॥ अजि० ॥ ७ ॥
 ॥ पद त्रैतालीशमुं ॥ राग काफी ॥

॥ जौलौं अनुभव ज्ञान घटमें प्रगट जयो न
 हीं ॥ जौलौं ॥ ए आंकणी ॥ तौलौं मन थिर होत न
 हीं ढिन, जिम पीपरको पान ॥ वेद नस्यो पण जेद
 विना शठ, पोथी थोथी जाणरे ॥ घ० ॥ १ ॥ रस
 नाजनमें रहत इव्य नित्य, नहिं तस रस पहिचान रे ॥
 तिम श्रुतपाठी पंमितकूं पण, प्रवचन कहत अज्ञान ॥
 घ० ॥ २ ॥ सार लह्या विण नार कह्यो श्रुत,

खर दृष्टांत प्रमाण ॥ चिदानंद अथात्मसैली, समज परत एक तान रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चुंमालीशमुं ॥ राग काफी ॥

॥ अकथ कथा कुण जाणे हो, तेरी चतुर सनेही ॥ अकथ० ॥ ए आंकणी ॥ नयवादी नयपद ग्रहीने, जूठा जगडा ठाणे ॥ निरपख लख चख स्वाद सुधा को, तेतो तनक न ताणे हो ॥ तेरी० ॥ १ ॥ ढिनमें रूप रचत नानाविध, आप अरूप बखाने ॥ ढिन मूरख ज्ञाना होये ढिनमें, न्याय सकल ढिन जाणे हो ॥ तेरी० ॥ २ ॥ चोर साध कबु कह्यो न परतु है, लख नाना गुणठाणे ॥ जैसो हेतु तैसो चिदानंद, चित्त श्रद्धा इम आणे हो ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

॥ पद पीस्तालीशमुं ॥ राग काफी ॥

॥ अलख लख्या किम जावे हो, ऐसी कोउ जुग ति बतावे ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ तन मन वचना तीत ध्यान धर, अजपा जाप जपावे ॥ होय अमोल लोलता त्यागी ज्ञान सरोवर न्हावे हो ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ शुद्ध स्वरूपमें शक्ति संचारत ममता दूर व हावे ॥ कनक उपल मल जिनता काजे, जोगानल उपजावे हो ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ एक समय समश्रेणी

रोपी, चिदानंद इम गावे ॥ अलख रूप होइ अलख
समावे, अलख जेद एम पावे हो ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥

॥ पद ठेंतालीशमुं ॥ राग काफ़ीनी होरी ॥

॥ अनुभव मित्त मिलायदे मोकूं, श्याम सुंदर वर
मेरा रे ॥ अनु० ॥ ए आंकणी ॥ शीयल फाग पिया
संग रमूंगी, गुण मानुंगी में तेरा रे ॥ ज्ञान गुलाल
प्रेम पीचकारी, शुचि श्रद्धा रंग जेरा रे ॥ अ० ॥ १ ॥
पंच मिथ्यात निवार धरूंगी में, संवर वेश जलेरा रे ॥
चिदानंद ऐसी होरी खेलत, बहुरि न होय नव फेरा
रे ॥ अ० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥ राग काफ़ीनी होरी ॥

॥ एरि मुख होरी गोवो री, सहज श्याम घर आए ॥
सखी मुख० ॥ ए आंकणी ॥ जेद ज्ञानकी कुंजगल
नमें, रंग रचावो री ॥ सखी मुख० ॥ १ ॥ शुद्ध श्रद्धान
सुरंग फूलके, मंमप ठावो री ॥ एरि घर मंमप ठावो
री ॥ सखी० ॥ २ ॥ वास चंदन शुननव अरगजा,
अंग लगावो री ॥ एरि पीया अंग लगावो री ॥ स
खी० ॥ ३ ॥ अनुभव प्रेम पीयाले प्यारी, जर जर
पावो री ॥ कंतकूं जर जर पावो री ॥ सखी० ॥ ४ ॥
चिदानंद समता रस मेवा, हिल मिल खावो री ॥

सहज श्याम घर आए, सखी मुख होरी गावो री॥५॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥ राग जंगलो काफी ॥

॥ जगमें नहिं तेरा कोई, नर देखहु निहचें जोई ॥

जग० ॥ ए आंकणी ॥ सुत मात तात अरु नारी,

सहु स्वारथके हितकारी ॥ बिन स्वारथ शत्रु सोई ॥

जग० ॥ १ ॥ तुं फिरत माहा मदमाता, विषयन

संग मूरख राता ॥ निज संगकी सुधबुद्ध खोई ॥ जग०

॥ २ ॥ घट ज्ञानकला नवि जाकूं, पर निज मानत

सुन ताकूं ॥ आखर पढतावा होई ॥ जग० ॥ ३ ॥

नवि अनुपम नरजव हारो, निज शुद्ध स्वरूप निहा

रो ॥ अंतर ममता मल धोई ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रभु

चिदानंदकी वाणी, धार तूं निश्चें जग प्राणी ॥ जिम

सफल होत जव दोई ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अयोगणपचाशमुं ॥ राग जंगलो काफी ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी जेद तिन

पाया ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ तन धन जोबन सुख

जेता, सहु जाणहुं अथिर सुख तेता ॥ नर जिम बादलकी

ढाया ॥ जू० ॥ १ ॥ जिम अनित्य जाव चित्त आ

या, लख गलित वृषजकी काया ॥ बूजे करकंमूरा

या ॥ जू० ॥ २ ॥ इम चिदानंद मनमांही, कबु करी

यें ममता नांही ॥ सद्गुरु ए जेद लखाया ॥ जू० ॥ ३ ॥

॥ पद पच्चाशमुं ॥ राग सोरठ ॥

॥ आतम ध्यान समान ॥ जगतमें ॥ आ० ॥

साधन नवि कोउ आन ॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥

रूपातीत ध्यानके कारण, रूपस्यादिक जान ॥ ता

हुमें पिंमस्थ ध्यान पुन, ध्याताकूं परधान ॥ जग० ॥

॥ १ ॥ ते पिंमस्थ ध्यान किम करियें, ताको एम

विधान ॥ रेचक पूरक कुंजके शांतिक, कर सुखमन

घर आन ॥ जग० ॥ २ ॥ प्राण समान उदान

व्यानकूं, सम्यक् ग्रहदुं अपान ॥ सहज सुजाव

सुरंग सजामें, अनुजवं अनहद तांन ॥ जग० ॥

॥ ३ ॥ कर आसन धर शुचि सममुझा, ग्रही गुरुगम

ए ज्ञान ॥ अजपा जाप सोदं सु समरनां, कर अनुजव

रस पान ॥ जग० ॥ ४ ॥ आतम ध्यान नरतचक्री

लह्यो, जवन आरीसा ज्ञान ॥ चिदानंद शुज ध्यान

जोग जन, पावत पद निरवाण ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद एकावनमुं ॥ राग शोरठ गिरनारी ॥

॥ प्रचु मेरो मनडो हटक्यो न माने ॥ प्रचु० ॥ ए

आंकणी ॥ बहुत जांत समजायो याकूं, चोडेहू अरु

ठाने ॥ पण इम शीखामण कबु रंचक, धारत नवि नि

ज काने ॥ प्रष्टु ० ॥ १ ॥ बिनमें रुष्ट तुष्टहोय बिनमें, रा
व रंक बिनमांहि ॥ चंचल जेम पताका अंचल, तेह
विगत इण मांहि ॥ प्रष्टु ० ॥ २ ॥ वक्र तुरंग जिम
सुलटी शिक्हा, तज उलटी हु ठाने ॥ विषमगति अति
याकी साहेब, अतिशयधर कोउ जाने ॥ प्रष्टु ० ॥ ३ ॥
अति उगतियें कहुं हुं तुमथी, तुम बिन कोउ न सिया
ने ॥ चिदानंद प्रष्टु ए विनतिकी, अब तो लाज ठे थां
ने ॥ प्रष्टु ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बावनमुं ॥ राग सोरठ मलार ॥

॥ तारो जी राज तारो जी राज, दीनानाथ अब
मोहे तारो जी राज ॥ ए आंकणी ॥ पूरव पुण्य उदय
तुम जेठे, तारण तरण जिहाज ॥ दीना ० ॥ १ ॥
पतित उक्षरण तुम पण धाख्यो, हुं पतितन सिरता
ज ॥ दी ० ॥ २ ॥ आगें अनेक उधारे तदपिन, क
ठिनता म ल्यो आज ॥ दी ० ॥ ३ ॥ इणो अक्सर जिम तिम
करी रस्वीयें, बिरुद ग्रहेकी लाज ॥ दी ० ॥ ४ ॥ चिदानंद
सेवक जिन साहेब, नीको बन्यो हे समाज ॥ दी ० ॥ ५ ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ आवोजी राज आवोजी राज, साहेबा थें महा
रे मोलें आवोजी राज ॥ ए आंकणी ॥ सीस नमाय

कर जोड कहतहूं, जरतेकों न जरावो ॥ हस
हस नाथ जरे पर अब तुम, काहेकूं लौन लगावो ॥
साहे० ॥ १ ॥ हमकूं त्याग पिया शोक्य सदन तुम,
बिना बोलाए जावो ॥ जा कारनही मेर नहीं आवत,
ते कोउ चूक दिखावो ॥ साहे० ॥ २ ॥ कुमता कुटि
लके बस इम साहेब, काहेकूं लोक हसावो ॥ तुमकूं
कवन शिखावे तुम तो, औरनकूं समजावो ॥ साहे०
॥ ३ ॥ वाके वस वरति तुम नायक, जे जे विध दुःख
पावो ॥ ते सहु ठानो नहीं कोउ मोथी, काहेकूं प्रगट
कहावो ॥ साहे० ॥ ४ ॥ चिदानंद सुमताके बचन
सुन, जेज्यो हें हरख वधावो ॥ तुम मंदिर आवत प्रभु
प्यारी, करीयें न मन पठतावो ॥ साहे० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥
॥ पद चोपनसुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ गढगिरनार, रूडो लागे ठे जी, थांको गढ गिरना
र ॥ ए आंकीणी ॥ नार अठार अपार कियो तिहां, व
नराजी विस्तार ॥ निर्मल नीर समीर वहत नित्य, प
थिक जन मनोहार ॥ रूडो० ॥ १ ॥ शुद्ध समाधि वि
गत उपाधि, जोगीसर चित्त धार ॥ करत गंजीर गुहामें
निशदिन, गुरुगम ज्ञान बिचार ॥ रूडो० ॥ २ ॥ क
व्याण कहू त्रस्य तिहां रे, शोचत जगदाधार ॥ चिदा

नंद प्रभु अब मोहे तारो, जिम तारी निज ना
र ॥ रूडो ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पञ्चावनमुं ॥ राग सोयणी ॥

॥ अनुभव ज्योति जगी ठे, हीये हमारे बे ॥ अ० ॥
॥ ए आंकणी ॥ कुमता कुटिल कहा अब करिहा, सु
मता हमारी संगी ठे ॥ अ० ॥ १ ॥ मोह मिथ्यात
निकट नवि आवे नव परिणत ज्युं पगी ठे ॥
॥ अ० ॥ २ ॥ चिदानंद चित्त प्रभुके नजनमें, अनु
पम अचल लगी ठे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद षष्पन्नमुं ॥ राग सोयणी ॥

॥ सरण तिहारे गही ठे, चंदाप्रभुजी बे ॥ स० ॥
॥ ए आंकणी ॥ जनम जरा मरणादिक केरी, पीडा
बहुत सही ठे ॥ स० ॥ १ ॥ परदुःख जंजन नाथ बि
रुद तुव, तातें तुमकों कही ठे ॥ स० ॥ २ ॥ चि
दानंद प्रभु तुमारे दरसथी, वेदना अशुच दही
ठे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ समज परी मोहे समज परी, जग माया अब
जूठी मोहे समज ॥ ए आंकणी ॥ काल काल तूं
क्या करे मूरख, नांही जरुंसा पल एक घरी ॥ स०

॥ १ ॥ गांफिल ढिन नर नांही रहो तुम, शिरपर
घूमे तेरे काल अरी ॥ स० ॥ १ ॥ चिदानंद एबात
हमारी प्यारे, जाणो भित्त मनमांहे खरी ॥ स० ॥ ३ ॥

॥ पद अछावनमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ हारे चित्तमें धरो प्यारे चित्तमें धरो, एती
शीख हमारी, प्यारे अब चित्तमें धरो ॥ ए आंक
णी ॥ थोडासा जीवनके काज अरे नर, काहेकूं ठल
परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ हारे कूड कपट परझोह
करत तुम, अरे नर परजवथी न करो ॥ एती० ॥ २ ॥
चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरण जव
डुःखमें परो ॥ एती० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अयोगणशाठमुं ॥ राग मलार ॥

॥ ध्यानघटा घन ठाए, सु देखो माई ॥ ध्यान० ॥
ए आंकणी ॥ दम दामिनी दमकति दहु दिस अति,
अनहद गरज सुनाए ॥ सु० ॥ १ ॥ मोटी मोटी
बुद खिरत वंसुधा शुची, प्रेम परम जर लाए ॥ सु० ॥
॥ २ ॥ चिदानंद चातक अति तलपत, शुद्ध शुद्धाजल
पाए ॥ सु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद शाठमुं ॥ राग मल्हार ॥

॥ मत जावो जोर बिठोर, वालम अब ॥ मत० ॥

ए आंकणी ॥ पीउ पीउ पीउ रटत बपैया, गरजत
 धन अति घोर ॥ वालम० ॥ १ ॥ चम चम चम चम
 चमकत चपला, मोर करत मिल सोर ॥ वालम० ॥ २ ॥
 उमग चली सरिता सायर मुख, नर गए जल चिहुं
 ओर ॥ वालम० ॥ ३ ॥ उठी अटारी रयण अंधारी,
 विरही करत ऊकजोल ॥ वालम० ॥ ४ ॥ चिदा
 नंद प्रभु एक वार कह्यो, जाणो वार करोर ॥
 वालम० ॥ ५ ॥

॥ पद एकशठमुं ॥ राग बिहाग ॥

॥ पीया पीया पीया, बोल मत पीया पीया पीया ॥
 पी० ॥ ए आंकणी ॥ रे चातुक तुंम शब्द सुणत मेरा,
 व्याकुल होत हे जीया ॥ फूटत नांहि कठिन अति
 धन सम, नितुर जया ए हीया ॥ बो० ॥ १ ॥ एक शोक्य
 दुःखदायी कंत जिने, कर कामण वस कीया ॥ दूजे
 बोल बोल खग पापी, तुं अधिका दुःख दीया ॥ बो० ॥
 ॥ २ ॥ कर्ण प्रवेश उठी होइ व्याकुल, विरहानल जल
 तिया ॥ चिदानंद प्रभु इन अवसर मिल, अधिक
 जगत जस लीया ॥ बो० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

पद बाशठमुं ॥ अजित जिएंदरुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ परमात्म पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण

जन आश ॥ पूरण दृष्टि निहालीयें, चित्त धरियें हो
 अमची अरदास ॥ परमाणु ॥ १ ॥ सर्व देश घाती
 सद्दु,अघाती हो करी घात दयाल ॥ वास कीयो शिव
 मंदिरें, मोहे वीसरी हो नमतो जग जाल ॥ परमाणु
 ॥ २ ॥ जग तारक पदवी लही, ताच्या सही हो अ
 पराधी अपार ॥ तात कहो मोहे तारतां, किम की
 नी हो इणें अवसर वार ॥ परमाणु ॥ ३ ॥ मोह महा
 मद ठाकथी, हुं ठकीयो हो नांहि सूध लगार ॥ उ
 चित्त सही इणें अवसरें, सेवकनी हो करवी संजाल ॥
 परमाणु ॥ ४ ॥ मोह ग्यां जो तारशो, तिणवेला
 हो कहा तुम उपगार ॥ सुख वेला सज्जन घणां, दुःख
 वेला हो विरला संसार ॥ परमाणु ॥ ५ ॥ पण तुम
 दरिसन जोगथी, थयो हृदयें हो अनुभव परकाश ॥
 अनुभव अन्यासी करे, दुःखदायी हो सद्दु कर्म विना
 श ॥ परमाणु ॥ ६ ॥ कर्मकलंक निवारिने, निजरू
 पें हो रमे रमता राम ॥ लहत अपूरव जावथी,इण
 रीतें हो तुम पद विश्राम ॥ पण ॥ ७ ॥ त्रिकरण जोगें
 वीनवुं, सुखदायी हो शिवादेवी नंद ॥ चिदानंद मनमें
 सदा, तुमे आपो हो प्रभु नाण दिणंद ॥ परमाणु ॥ ८ ॥

॥ पद त्रेशठमुं ॥ उम नमरा कंकणीपर बैठा ॥

॥ नथणीसैं ललकारुंगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीशंखेसर पासजिनंदके, चरणकमल चित्त जा
उंगी ॥ सुणजो रे सङ्गन नित्य ध्याउंगी ॥ ए आंक
णी ॥ एहवा पण दृढधारी हियामें, अन्यद्वार नहि
जाउंगी ॥ सु० ॥ १ ॥ सुंदर सुरंग सलूनी मूरत, नि
रख नयन सुख पाउंगी ॥ सु० ॥ २ ॥ चंपा चंबेली
आन मोघरा, अंगीयां अंग रचाउंगी ॥ सु० ॥ ३ ॥

शीलादिक शणगार सजी नित्य, नाटक प्रचुकूं दे
खाउंगी ॥ सु० ॥ ४ ॥ चिदानंद प्रचु प्राण जीवनकूं,
मोतियन आल वधाउंगी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोशठमुं ॥ अजितजिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ अजित अजित जिन ध्याइयें, धरि हिरदे हो
जवि निर्मल ध्यान ॥ हृदय सरोजामें रह्यो, सुरजी
सम हो लही तास विज्ञान ॥ अजितं० ॥ १ ॥ कीटध्या
न नृंगी तणो, निज धरतां हो ते नृंगी निदान ॥ अकल
धौत स्वरूपता, लोह फरसत हो पारस पाखान ॥
अ० ॥ २ ॥ पुन पिचुमंदादिक सहि, होय चंदन हो म
लयागरु संग ॥ सैंधव क्यारीमें पड्यो, जिम पा
लट्टे हो वस्तुनो रंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ ध्येयरूपनी एक

ता, करे ध्याता हो धरे ध्यान सुजान ॥ करे कतक
मलनिन्नता, जिम नासे हो तम उगते जान ॥ अ० ॥ ४ ॥
पुष्टालंबन योगथी, निरालंबता हो सुख साधन जेह ॥
चिदानंद अविचल कला, कृणमांहे हो नवि पावे
तेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांशठमुं ॥ निर्मल होई नज ले
प्रभु प्यारा ॥ ए देशी ॥

॥ लाग्या नेह जिनचरण हमारा, जिम चकोर चि
त्तचंद्र पीयारा ॥ सुनत कुरंग नाद मन लाई, प्राण
तजे पण प्रेम निजाई ॥ घन तज आनन जावत जोई,
ए खग चातुक केरी बडाई ॥ ला० ॥ १ ॥ जलत निः
शंक दीपके मांहि, पीर पतंगकूं होत के नांहि ॥ पी
डा तदपण तिहां जाहि, शंक प्रीतिवश आनत नां
हि ॥ ला० ॥ २ ॥ मीन मगन नवि जलथी न्यारा,
मानसरोवर हंस आधारारा ॥ चोर निरख निशि अति
अंधियारा, केकी मगन फुन सुन गरजारा ॥ ला०
॥ ३ ॥ प्रणव ध्यान जिम योगी आराधे, रस रीती
रससाधक साधे ॥ अधिक सुगंध केतकीमें लाधे, मधु
कर तस संकट नवि वाधे ॥ ला० ॥ ४ ॥ जका चित्त
जिहांथिरता माने, ताका मरम तो तेहिज जाने ॥ जिन

नक्ति हिरदयमें ठाने, चिदानंद मन आनंद आने ॥
ला० ॥ ५ ॥ इति पदं॥

॥ पद ढाशठसुं ॥

॥ हो वांसलडी वेरण थइ लागी रे ब्रजनी नारने॥
ए देशी॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनित्य तजी चि
त्त धारीयें ॥ हो बालमजी वचन तणो अति उंमो म
रम विचारीयें ॥ ए आंकणी ॥ तुमें कुमतिके घर जा
वो ठो, निज कुलमें खोट लगावो ठो, धिक एठ जग
तनी खावो ठो ॥ हो प्री० ॥ १ ॥ तमें त्याग अमी
विष पीयो ठो, कुगतिनो मारग लीयो ठो, एतो का
ज अजुगतो कीयो ठो ॥ हो प्री ० ॥ २ ॥ एतो मोह
रायकी चेटी ठे, शिव संपत्ति एहथी ठेटी ठे, ए तो
साकरतें गल पेटी ठे ॥ हो प्री० ॥ ३ ॥ एक शंका मे
रे मन आवी ठे, किये विध ए तुम चित्त जावी ठे, एतो
दाकण जगमें चावी ठे ॥ हो प्री० ॥ ४ ॥ सहु रुद्धि
तुमारी खाई ठे, करी कामण मति जरमाई ठे, तुमें पु
एय जोगें ए पाई ठे ॥ हो प्री० ॥ ५ ॥ मत आंब काज
बावल बोवो, अनुपम नव विस्था नवि खोवो, अब
खोल नकण प्रगट जोवो ॥ हो प्री० ॥ ६ ॥ इणविध स
मता बहु समजावै, गुण अवगुण कही सहु दरसा

वे, सुणि चिदानंद निज घर आवे ॥ हो प्री० ॥ ७ ॥

॥ पद सडशठमुं ॥ गहूंली ॥

॥ चंडवदनी मृग लोयणी, एतो सजी शोल शण
गार रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरी हियडे ह
रख अपार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ हारें एतो मुक्ताफल
मूठी नरी, रचे गहूंली परम उदार रे ॥ जिहां वाणी
योजनगामिनी, घन वरसे अखंफित धार रे अ० ॥

॥ २ ॥ हारे जिहां रजत कनक रतनना, सुरर
चित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्य मणिसिंहासनें, शो
नित श्री जगदाधार रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ हारे जिहां नर
पति खगपति लखपति, सुरपति युत परखदा बार
रे ॥ लब्धि निधान गुण आगरु, जिहां गौतमसें गण
धार रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ हारे जिहां जीवादिक नवतत्त्व
नो, षट्पञ्च जेद विस्तार रे ॥ एतो श्रवण सुणी नि
र्मल करे, निज बोधबीज सुखकार रे ॥ अ० ॥ ५ ॥
हारें जिहां तीन ठत्र त्रिचुवन उदित, सुर ढालत चा
मर चार रे ॥ सखी चिदानंदकी बंदना, तस होजो
वारंवार रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अडशष्ठं ॥

॥ हो कृंशुजिन मनडुं किएही न बाजे ॥ ए देशी ॥

॥ अनुभव अमृतवाणी हो ॥ पास जिन ॥ अण ॥ सु
रपति जयो जे नाग श्रीमुखथी, ते वाणी चित्त आणी
हो ॥ पाण ॥ १ ॥ स्यादवाद मुझ मुझित शुचि, जिम सुर
सरिता पाणी ॥ अंतर मिथ्या जावलता जे, ठेदण तास
कृपाणी हो ॥ पाण ॥ २ ॥ अहोनिश नाथ असंख्य मल्या
तिम, तिरगठे अचरिज एही ॥ लोकालोक प्रकाश अं
श जस, तस उपमा कहो केही हो ॥ पाण ॥ ३ ॥ विरहवि
योगहरणी ए दंती, संधी वेग मिलावे ॥ याकी अनेक
अवंचकताथी, आणा विमुख कहावे हो ॥ पाण ॥ ४ ॥
अक्षर एक अनंत अंश जिहां, लेप रहित मुख जांखो ॥
तास क्योपशम जाव बंध्याथी, शुद्ध वचन रस चा
खो हो ॥ पाण ॥ ५ ॥ चाख्याथी मन तृप्त अयुं नवि,
शे माटे लोनावो ॥ कर करुणा करुणा रस सागर,
पेट नरी ते मावो हो ॥ पाण ॥ ६ ॥ ए लवलेश लह्या
विण साहिब, अशुचि युगलगति वारी ॥ चिदानंद वा
मासुत केरी, वाणीनी बलिहारी हो ॥ पाण ॥ ७ ॥

॥ पद उगणोत्तेरमुं ॥ राग मालकोश ॥

॥ पूरव पुण्य उदय करी चेतन, नीका नरजव पाया रे

॥ पू० ॥ ए आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि, दुर्लभ
 अधिक बताया रे ॥ दश दृष्टांतें दोहिला नरजव, उत्तरा
 ध्ययनें गाया रे ॥ पू० ॥ १ ॥ अवसर पाय विषय रस राच
 त, तेतो मूढ कहाया रे ॥ काग उमावण काज विप्र जि
 म, मार मणि पढताया रे ॥ पू० ॥ २ ॥ नदी घोळ पाखान
 न्याय कर, अर्धवाट तो आया रे ॥ अर्ध सुगम आगल
 रंही तिनकूं, जिन कबु मोह घटाया रे ॥ पू० ॥ ३ ॥
 चेतन चार गतिमें निश्चें, मोक्षघार ए काया रे ॥ करत का
 मना सुर पण याकी, जिनकूं अनर्गल माया रे ॥ पू०
 ॥ ४ ॥ रोहण गिरि जिम रतनखाण तिम, गुण सद्गु
 यामें समाया रे ॥ महिमा मुखथी वरणत जाकी, सुरं
 पति मन शंकाया रे ॥ पू० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम सं
 यम केरी, अति शीतल जिहां ठाया रे ॥ चरण करण
 गुण धरण महामुनि, मधुकर मन लोनाया रे ॥ पू० ॥ ६ ॥
 या तन विण तिहुं काल कहो किन, साचा सुख निप
 जाया रे ॥ अवसर पाय न चूक चिदानंद, सतगुरु
 यूं दरसाया रे ॥ पू० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सित्तेरमुं ॥ पर्यूषण स्तुति ॥

॥ मणि रचित सिंहासन, बेठा जगदाधार ॥ पर्यूष
 ण केरो, महिमा अगम अपार ॥ निजमुखथी दाखी,

साखी सुर नर वृंद ॥ ए पर्व पर्वमां, जिम तारामां
 चंद ॥ १ ॥ नागकेतुनी परें, कल्प साधना कीजें ॥ ब्र
 त नियम आखडी, गुरुमुख अधिकी लीजें ॥ दोय जे
 दें पूजा, दान पंच परकार ॥ कर पडिक्कमणां धर, शि
 यल अखंभित धार ॥ २ ॥ जे त्रिकरण शुद्धें, आराधे
 नवकार ॥ नव सात आठ अब, शेषें तास संसार ॥
 सहु सूत्र शिरोमणि, कल्पसूत्र सुखकार ॥ ते श्रव
 ण सुणीने, सफल करो अवतार ॥ ३ ॥ सहु चैत्य
 जुहारी, खमत खामणां कीजें ॥ करी साहामीवत्सल,
 कुगति द्वार पट दीजें ॥ अछाइ महोत्सव, चिदानंद चि
 त्तं लाई ॥ इम करतां संघने, शासन देव सहाई ॥४॥

॥ पद एकोतेरमुं ॥ राग सौरठ ॥

॥ क्या तेरा क्या मेरा, प्यारे सहु पडाइ रहेगा ॥ पंठी
 आय फिरत दहुं दिशथी, तरुवर रेन वसेरा ॥ सहु
 आपणे आपणे मारगतें, होत जोरकी वैरा ॥ प्या० ॥
 ॥ १ ॥ इंजाल गंधर्व नगर सम, मेढ दिनाका घेरा ॥ सु
 पन पदारथ नयन खुल्या जिम, जरत न बहुबिध हेखा
 ॥ प्या० ॥२ ॥ रविसुत करत शीशपर तेरे, निशिदिन
 ठाना फेरा ॥ चेत सके तो चेत चिदानंद, समज श
 ब्दए मेरा ॥ प्या० ॥ ३ ॥

(१००)

॥ अथ श्री आनंदघनजी कृतपद १०६ मुं ॥

रागनट्ट

॥ किनगुन जयो रे उदासी जमरा ॥ कि० ॥ पंख
तेरी कारी मुख तेरा पीरा, सब फूलनको वासी ॥ ज०
॥ कि० ॥ १ ॥ सब कलियनको रस तुम लीनो, सो
क्युं जाय निरासी ॥ ज० ॥ कि० ॥ २ ॥ आनंद घन
प्रभु तुमारे मिलनकुं, जाय करवत व्युं कासी ॥
ज० ॥ कि० ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री आनंदघनजी कृतपद १०७ मुं ॥

सगवसंत

॥ तुम ज्ञान विज्ञो फूली बसंत, मन मधुकरही सु
खसौं रसंत ॥ तु० ॥ १ ॥ दिन बडे जये बैरागजा
व, मिथ्यामति रजनीको घटाव ॥ तु० ॥ २ ॥ बहु
फूली फेली सुरुचि वेल, ग्याताजनसमतासंगकेल ॥
तु० ॥ ३ ॥ द्यानत बानी पिक मधुररूप, सुर नर
पशु आनंद घन सरूप ॥ तु० ॥ ४ ॥

॥ इति मुनि श्री आनंदघनजी तथा मुनि श्री
चिदानंदजी कृत पद समाप्त ॥

